SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

नवकिरण

सत्यमेव जयते

वर्ष 2026

45वाँ अंक

यात्रा विशेषांक

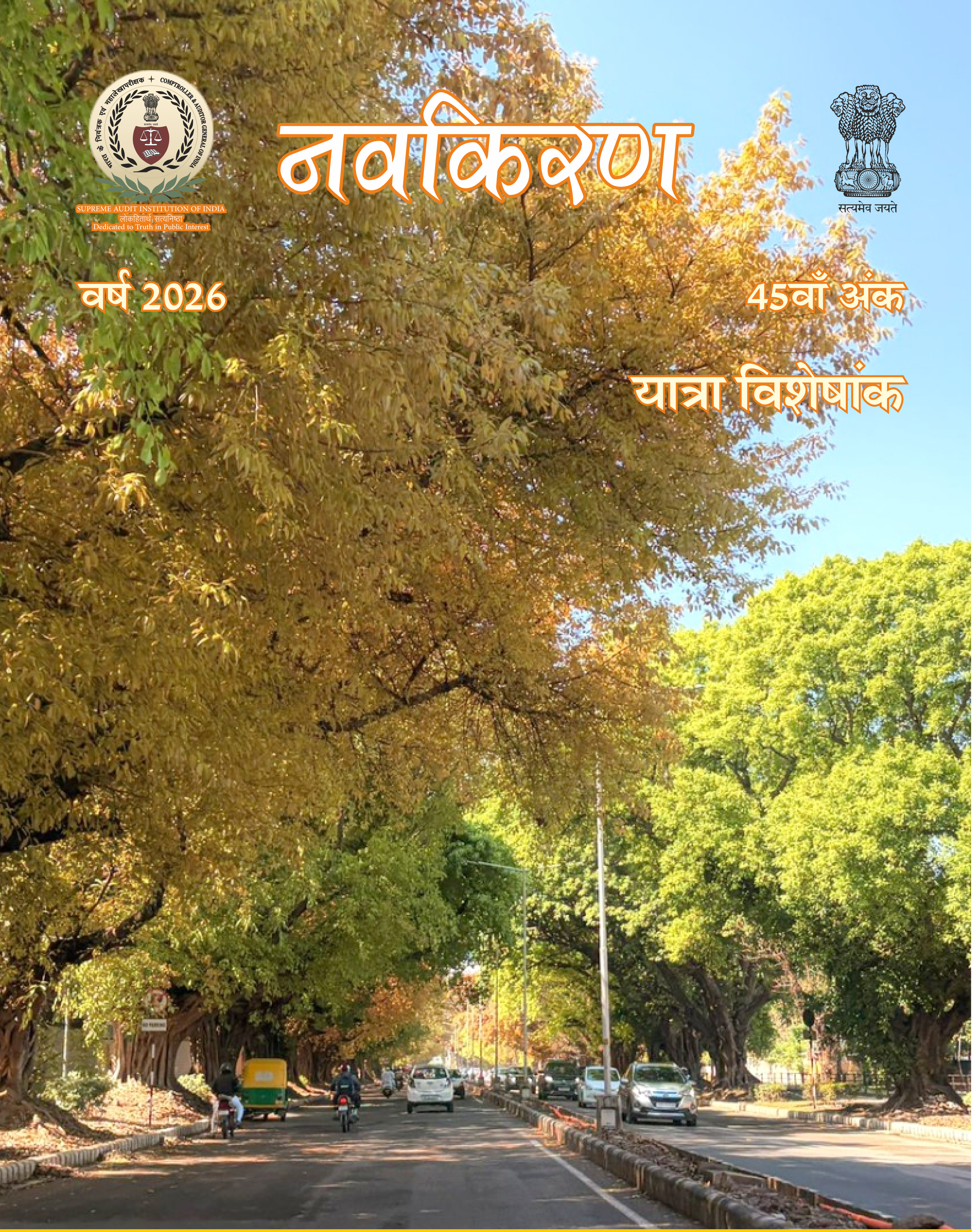

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
हरियाणा, चण्डीगढ़

कार्यालय परिसर में अधिकारियों/कर्मचारियों को भ्रष्टाचार निरोधक शपथ दिलाते हुए प्रधान महालेखाकार महोदय।

हिंदी कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ प्रो. (डॉ.) सुधीर बावेजा (सेवानिवृत्त), पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ । वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया द्वारा भेंटस्वरूप पौधा देकर सम्मानित किया गया ।

राजभाषा

दिनांक 18 जनवरी, 1968 को संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित राजभाषा संकल्प में यह व्यक्त किया गया है कि:-

"यह सभा संकल्प करती है कि हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को बढ़ाने हेतु तथा संघ के विभिन्न राजकीय प्रयोजनों के लिए इसके उत्तरोत्तर प्रयोग हेतु भारत सरकार द्वारा एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार किया जाएगा और उसे कार्यान्वित किया जाएगा और किए गए उपायों एवं की गई प्रगति की विस्तृत वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट संसद के दोनों सदनों के पटल पर रखी जाएगी और सभी राज्य सरकारों को भेजी जाएगी।"

2. उक्त संकल्प के उपबंधों के अनुसरण में राजभाषा विभाग द्वारा प्रति वर्ष केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा कार्यान्वयन के लिए राजभाषा हिंदी के प्रसार और प्रगामी प्रयोग हेतु वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है। वर्ष 2025-26 का वार्षिक कार्यक्रम इसी क्रम में जारी किया जा रहा है। हिंदी बोले जाने और लिखे जाने के आधार पर देश के राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों को तीन क्षेत्रों में चिह्नित किया गया है। इन तीनों क्षेत्रों यथा 'क', 'ख ' और 'ग' का विवरण निम्नानुसार है:-

क्षेत्र	क्षेत्र में शामिल राज्य/संघ राज्य क्षेत्र
'क'	बिहार, छत्तीसगढ, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, मध्य प्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्य तथा राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली और अंडमान व निकोबार द्वीप समूह संघ राज्य क्षेत्र।
'ख '	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमन व दीव और दादरा व नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र।
'ग'	'क' और 'ख' क्षेत्र में शामिल नहीं किए गए अन्य सभी राज्य या संघ राज्य क्षेत्र।

स्वत्वाधिकार
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) हरियाणा
चंडीगढ़ का कार्यालय

प्रकाशन
"नवकिरण"

प्रकाशक
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी) हरियाणा
चंडीगढ़ का कार्यालय

अंक: पैंतालीसवाँ (45वाँ)

पत्रिका परिवार- मुख्य संरक्षक
श्री नवनीत गुप्ता
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक
सुश्री वीनस चौधरी
वरिष्ठ उप-महालेखाकार (प्रशासन)

संपादक
सुश्री डॉ. सुधा तिवारी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक सहयोग
श्री विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
श्री सचिन सिंह, कनिष्ठ अनुवादक
श्री सुमित, लेखाकार

मुद्रक
मूल्य: राजभाषा के प्रति निष्ठा

चित्र :-

आवरण (1):- चंडीगढ़

आवरण (2):- सुखना झील पृष्ठभूमि में। हिंदी की वरिष्ठ रचनाकार 'ममता कालिया' एव साहित्य अकादमी 2025 से पुरस्कृत कृति 'जीते जी इलाहाबाद'

दोनों चित्र इंटरनेट से साभार

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विवरण	लेखक सर्व श्री/ सुश्री/ श्रीमती	पृष्ट सं.
1.	मुख्य संरक्षक की कलम से	नवनीत गुप्ता	1
2.	संरक्षक की कलम से	वीनस चौधरी	2
3.	संदेश अध्यक्ष, नराकास-2	आचार्य भोला राम गुर्जर	3
4.	संपादकीय	डॉ सुधा तिवारी	4
5.	केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा	सुमित	5-7
6.	चित्तकोबरा की मनु	डॉ सुधा तिवारी	8-9
7.	आधुनिक युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस	कुलदीप सैनी	10
8.	राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संस्थाएँ: भूमिका, स्वरूप और महत्त्व	डॉ सुधा तिवारी	11-12
9.	बड़ी दीदी का अधिकार	विक्रम सिंह	13
10.	बिहार की बात निराली है	नितीश कुमार	14-15
11.	बद्री-केदार की राह में	सुमित	16
12.	मैं एक अबोध बच्चा	राजकुमार	17
13.	मेरी क्या गलती (गिलहरी की कलम से)	विक्रम सिंह	
14.	मेरी पहली हवाई यात्रा	पंकज अरोडा	18
15.	चंडीगढ़ – एक ख्वाबों का शहर	नरेंद्र कुमार	19
16.	हाउस-वाइफ - एक अनदेखा स्तंभ	नरेन्द्र सिंह चारण	20
17.	जिंदगी का सफर	चांद सिंह दहिया	21
18.	वृक्ष लगाएँ	योगेश 'नवीन'	22
19.	आशा रुपी पंछी	सचिन सिंह	23
20.	खेलों का महत्त्व	अमनदीप सिंह	24
21.	किताबें: हमारी सबसे सच्ची दोस्त	रितेश गुप्ता	25-26
22.	फोन की घंटी	लोकेश	27
23.	पटरियों का शोर और एक पिता की खामोश जंग	विशाल कुमार गुप्त	28-29
24.	दिल्ली से चंडीगढ़	प्रमोद कुमार गुप्ता	30
25.	गर्मी के दिन	सचिन सिंह	31-32
26.	संघर्ष से सफलता तक: एक आम व्यक्ति की यात्रा	अंकित कुमार ठाकुर	33
27.	नैनीताल से सिटी ब्यूटीफुल तक: मेरा सफर	किशन जोशी	34
28.	आपके पत्र		35-36
29.	कार्यालय के उपयोग हेतु वाक्यांश अंग्रेजी-हिंदी		37-39
29.	कार्यालय में आयोजित कार्यक्रमों की झाकियाँ		40-42

अस्वीकरण - पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएं लेखक के अपने हैं, अत: कार्यालय एवं संपादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है

नवकिरण हिंदी पत्रिका 45वाँ अंक

नवकिरण परिवार

श्री नवनीत गुप्ता, प्रधान महालेखाकार
मुख्य संरक्षक

सुश्री वीनस चौधरी, वरि. उप महालेखाकार
संरक्षक

डॉ. सुधा तिवारी, सहायक निदेशक (राजभाषा)
संपादक

संपादकीय टीम

श्री विक्रम सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

श्री सचिन सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

श्री सुमित, लेखाकार

मुख्य संरक्षक की कलम से

विभागीय गृह पत्रिका ‘नवकिरण’ का 45वाँ अंक तथा वित्त वर्ष 2025-26 का यह द्वितीय संस्करण सुधि पाठकों के समक्ष मैं सहर्ष समर्पित करता हूँ। किसी भी कार्यालय की पत्रिका केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का मंच भर नहीं होती, बल्कि वह उस संस्थान की सामूहिक चेतना, बौद्धिक ऊर्जा और मानवीय संवेदनाओं का दर्पण भी होती है। ‘‘नवकिरण’’ ने समय-समय पर हमारे कार्यालय परिवार की प्रतिभाओं, उपलब्धियों तथा सरोकारों को एक सूत्र में पिरोने का सराहनीय कार्य किया है।

लेखांकन प्रक्रिया मूलतः संख्याओं, नियमों और प्रक्रियाओं से जुड़ा हुआ है, किन्तु इन सबके केंद्र में मानवीय श्रम, नैतिक निष्ठा और जनहित के प्रति प्रतिबद्धता निहित रहती है। जब यही कर्मनिष्ठा सृजनात्मकता से जुड़ती है, तब वह संगठन को केवल कार्यस्थल नहीं, बल्कि एक जीवंत परिवार का स्वरूप प्रदान करती है। आज का समय तीव्र परिवर्तन, तकनीकी विस्तार और कार्यसंस्कृति के नवाचारों का समय है। डिजिटल प्रणालियों का प्रसार, पारदर्शिता की बढ़ती अपेक्षाएँ तथा समयबद्ध सेवा-प्रदाय की अनिवार्यता–इन सबने हमारे दायित्वों को संश्लिष्ट रूप दे दिया है। ऐसे परिवेश में रचनात्मक संवाद, वैचारिक आदान-प्रदान तथा सहकर्मियों के बीच आत्मीयता के सेतु का कार्य ‘नवकिरण’ कर रही है।

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी न केवल अपने शासकीय दायित्वों का कुशल निर्वहन कर रहे हैं, बल्कि साहित्य, कला, संस्कृति, स्वास्थ्य, पर्यावरण तथा सामाजिक सरोकारों जैसे विविध विषयों पर भी गंभीर चिंतन कर रहे हैं। यह बहुआयामी प्रतिभा ही किसी भी संस्थान की वास्तविक पूँजी होती है।

नवकिरण पत्रिका राजभाषा के प्रसार के इस महत्वपूर्ण अभियान में उल्लेखनीय योगदान दे रही है, इसके लिए मैं संपादक के साथ-साथ संपादक-मंडल के सदस्यों तथा उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ, जिनके सक्रिय सहयोग और लेखन से इस पत्रिका ने आकार लिया है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ‘‘नवकिरण’’ की यह रश्मि आप सभी के बौद्धिक क्षितिज को आलोकित करेगी और राजभाषा के प्रचार-प्रसार के हमारे संकल्प को सुदृढ़ करेगी।

आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ।

नवनीत

(नवनीत गुप्ता)

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक की कलम से

कार्यालयीन राजभाषा गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 45 वें अंक (वित्त वर्ष 2025-26, द्वितीय संस्करण) के प्रकाशन पर मैं प्रसन्नता का अनुभव कर रही हूँ तथा कार्यालय के कार्मिकों के राजभाषा के प्रति समर्पण एवं निष्ठा से गौरव का अनुभव कर रही हूँ।

प्रशासनिक कार्य-संस्कृति में राजभाषा हिंदी का व्यापक अनुप्रयोग कर, कार्यालय द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं संवर्धन में अहम योगदान दिया जा रहा है। कार्यालय के सदस्य अपने दैनंदिन जीवन तथा पेशेवर दायित्वों के बीच 'नवकिरण' के लिए रोचक संस्मरण एवं कहानियाँ चुन लाते हैं। इसका प्रतिफल है कि वित्त वर्ष 2025-26 का यह दूसरा संस्करण आपके समक्ष प्रस्तुत है।

इस अवसर पर मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ और साथ ही पत्रिका के संपादक एवं पूरे संपादकीय टीम को उनके प्रशंसनीय योगदान के लिए बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ। पत्रिका के प्रकाशन में रचनात्मक योगदान देने वाले सभी रचनाकारों को शुभकामनाओं के साथ मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ। मैं आशा करती हूँ कि भविष्य में भी वे इसी प्रकार "नवकिरण" पत्रिका को समृद्ध करते रहेंगे।

(वीनस चौधरी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत हर्ष है कि हम सभी आपसी सहयोग से अपने कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। नराकास के माध्यम से विभिन्न कार्यालयों के मध्य समन्वय द्वारा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए अनेक उपयोगी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

हमारा उद्देश्य केवल हिंदी का औपचारिक उपयोग करना ही नहीं, बल्कि इसे अपने दैनिक कार्यों में सहज और प्रभावी रूप से अपनाना भी है। इससे न केवल राजभाषा नीति के लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता मिलती है, बल्कि कार्यालयों के कार्यों में पारदर्शिता और सरलता भी बढ़ती है।

मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से अपेक्षा एवं अनुरोध करता हूँ कि वे नराकास की गतिविधियों में सक्रिय रूप से सहभागिता कर कार्यालय के कामकाज में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित हों। हम सबके सामूहिक प्रयासों से राजभाषा हिंदी का प्रसार निश्चित रूप से सशक्त होगा।

मैं विशेषकर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, के 'नवकिरण' जैसे अभिनव प्रयासों का अभिनंदन करता हूँ।

अंततः मैं नराकास से जुड़े सभी सदस्यों को उनके समर्पण और प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी हम इसी उत्साह के साथ हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत रहेंगे।

हार्दिक शुभकामनाएं।

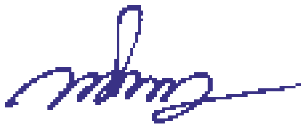

आचार्य (डॉ.) भोला राम गुर्जर
अध्यक्ष, नराकास-2
चंडीगढ़

संपादकीय

समय, चेतना और परिपूर्णता

'नवकिरण' के इस अंक को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मैं इस बात से संतुष्ट हूँ कि यह पत्रिका केवल कार्यालयीन गतिविधियों का दस्तावेज़ भर नहीं, बल्कि हमारे समय, समाज और संवेदनाओं का जीवंत अभिलेख भी बनती जा रही है। किसी भी संस्थान की पत्रिका तब सार्थक होती है जब वह सूचनाओं के संप्रेषण से आगे बढ़कर विचार, विमर्श और मूल्यबोध एवं नवाचार का मंच बन सके। 'नवकिरण' इस दिशा में एक विनम्र, किंतु प्रतिबद्ध प्रयास है।

हम ऐसे संक्रमणकालीन समय में जी रहे हैं जहाँ एक ओर अभूतपूर्व तकनीकी प्रगति, डिजिटल संजाल, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और त्वरित संचार ने कार्यसंस्कृति को नई गति दी है, वहीं दूसरी ओर मानवीय संवाद, संवेदना और आत्मीयता के सम्मुख बड़ी चुनौतियाँ खड़ी हैं। कार्यकुशलता के साथसाथ कार्यसंतोष, लक्ष्य के साथ-साथ मानवीय गरिमा, और उपलब्धि के साथ-साथ नैतिकता ये प्रश्न आज पहले से अधिक प्रासंगिक हो उठे हैं।

साहित्य ऐसे जटिल समय में जीवन को थोड़ा सहज करने की कोशिश करता रहता है, अनुभूति को कहानियों से जोड़कर। जहाँ प्रशासन व्यवस्था को सुचारु बनाता है, वहीं साहित्य आदमी के अंदर आदमीयत बनाए रखता है। दफ्तर की फाइलों, संख्याओं और प्रतिवेदनों के बीच यदि कविता की एक पंक्ति, संस्मरण का एक अंश या व्यंग्य की एक चुटीली धार प्रवेश कर जाए, तो कार्यस्थल केवल कार्यस्थल नहीं रहता वह सृजनस्थल बन उठता है।

हमारे देश की साहित्यिक परंपरा ने सदैव समय के प्रश्नों से मुठभेड़ किया है। भक्ति आंदोलन से लेकर आधुनिक प्रगतिशील लेखन तक साहित्य ने समय और समाज में व्याप्त अन्याय, असमानता, विडंबना और विसंगतियों को स्वर दिया है। आज भी जब हम पर्यावरण संकट, सामाजिक विषमता, उपभोक्तावाद, भाषाई असंतुलन या सांस्कृतिक विस्मृति जैसे विषयों से जूझ रहे हैं, साहित्य हमें न केवल सचेत करता है बल्कि दिशा भी प्रदान करता है।

'नवकिरण' का उद्देश्य इस भाषिक और साहित्यिक चेतना को प्रोत्साहित करना है और हम चाहते हैं कि यह मंच नए लेखकों को अभिव्यक्ति का अवसर दे, अनुभवी रचनाकारों को संवाद का विस्तार दे, और पाठकों को अनुभूति की रश्मि से संवर्धित करे। 'नवकिरण' का यह अंक इस संतुलन की खोज है - जहाँ समसामयिक मुद्दों की प्रखरता और साहित्य की कोमलता साथ-साथ उपस्थित हो। और अंत में कवि केदारनाथ सिंह की पंक्तियों के सहारे समय को संपूर्णता में पकड़ने की कोशिश करते हैं -

**"यह जो समूचा समय है
उसमें रोशनी, राख, नदियां, तिलचट्टे
सब कुछ है
सिर्फ समूचापन झर गया है।"
-केदारनाथ सिंह**

डॉ सुधा तिवारी,
सहायक निदेशक

केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा

भारत की धरती को अगर "आस्था की भूमि" कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। यहाँ हर नदी में गंगा है, हर पर्वत में शिव और हर घाटी में कोई न कोई कथा बसती है। उत्तराखंड के ऊँचे हिमालयी पर्वतों के बीच बसे केदारनाथ और बद्रीनाथ ऐसे ही दो धाम हैं, जहाँ सिर्फ देवता नहीं, बल्कि श्रद्धा, शांति और शक्ति का संगम होता है। हर साल लाखों श्रद्धालु इन दोनों तीर्थों की कठिन यात्रा पर निकलते हैं, ताकि बाबा केदार की गंभीर मुस्कान और भगवान बद्रीविशाल की कृपा दृष्टि प्राप्त कर सकें।

लेकिन इन धामों की यात्रा सिर्फ धर्म नहीं, एक जीवनानुभव है – जहाँ रास्ते सिखाते हैं धैर्य, पहाड़ सिखाते हैं विनम्रता, और हर मोड़ पर प्रकृति सिखाती है - "सच्ची सुंदरता शांति में होती है।

केदारनाथ की पौराणिक कथा

मान्यता है कि महाभारत के युद्ध के बाद जब पांडवों को यह अहसास हुआ कि उन्होंने अपने ही भाइयों का संहार किया, तो उन्होंने भगवान शिव से क्षमा माँगने का निश्चय किया। शिव उनसे नाराज थे और उन्हें क्षमा करने को तैयार नहीं हुए। वे हिमालय की ओर चले गए और गुप्तकाशी तथा केदारनाथ की ओर प्रस्थान किया। पांडव उनका पीछा करते रहे, तब भगवान शिव ने स्वयं को एक भैंसे (नंदी) का रूप धारण कर लिया। जब भीम ने भैंसे की पूंछ पकड़ने की कोशिश की, तो भगवान शिव भूमि में समा गए।

कहा जाता है कि उनकी पीठ (कूबड़) का भाग केदारनाथ में प्रकट हुआ, और अन्य भाग देश के विभिन्न हिस्सों में – जैसे तुंगनाथ, रुद्रनाथ, कल्पेश्वर और मध्यमहेश्वर में।

इन्हीं पाँच स्थानों को मिलाकर कहा जाता है – पंच केदार।

• मंदिर का निर्माण आदि शंकराचार्य द्वारा 8वीं शताब्दी में कराया गया माना जाता है।

• यह विशाल ग्रेनाइट पत्थरों से बना है जिन्हें जोड़ने में किसी सीमेंट या गारे का प्रयोग नहीं हुआ।

• आश्चर्य की बात यह है कि इतने ऊँचे और बर्फ़ीले इलाके में यह मंदिर हज़ारों सालों से लगभग अडिग खड़ा है।

मंदिर के अंदर शिवलिंग का आकार शंकु जैसा है, जो अन्य मंदिरों से बिल्कुल अलग है। कहा जाता है कि यह वही हिस्सा है जो भैंसे के रूप में भगवान शिव की पीठ के रूप में प्रकट हुआ था।

सुमित, लेखाकार

2013 की आपदा

जून 2013 में उत्तराखंड में भारी वर्षा ने तबाही मचा दी। 15 से 17 जून के बीच लगातार, असामान्य और अत्यधिक बारिश हुई। चोराबाड़ी झील (जिसे गांधी सरोवर भी कहा जाता है) के ऊपर ग्लेशियर टूटने और पानी के अचानक बहाव से नीचे का पूरा क्षेत्र जलमग्न हो गया। पानी की रफ्तार इतनी तेज़ थी कि उसने अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ – घर, धर्मशालाएं, होटल, पुल, सड़कें – सब बहा दिए। केदारनाथ नगर, जो मंदिर के चारों ओर बसा था, पूरी तरह मलबे में दब गया। हजारों लोग लापता हो गए या अपनी जान गंवा बैठे। मंदिर के सामने की सारी इमारतें बर्बाद हो गईं। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने पूरा शहर मिटा दिया हो।

पर जब राहत दल वहां पहुँचे, तो सबकी आंखें फटी की फटी रह गईं –मंदिर जस का तस खड़ा था!

जब भीषण जलप्रलय नीचे उतर रही थी, तब पहाड़ों से एक विशालकाय चट्टान टूटकर लुढ़कती हुई आई। यह चट्टान सीधे केदारनाथ मंदिर के पीछे आकर अटक गई। अगर वह चट्टान वहाँ न रुकती, तो मंदिर पर पूरा मलबा और पानी का बहाव सीधे टकराता और शायद मंदिर भी मिट्टी में मिल जाता। लेकिन यह चट्टान मंदिर के ठीक पीछे इस तरह अटकी कि उसने बाढ़ के प्रवाह को दो हिस्सों में बाँट दिया –एक धारा मंदिर के बाएँ और दूसरी दाएँ से निकल गई। मंदिर का पिछला हिस्सा हल्का-सा क्षतिग्रस्त हुआ, लेकिन मुख्य संरचना को कुछ नहीं हुआ। स्थानीय लोग और बचाव दल दोनों हैरान थे –इतनी विनाशकारी बाढ़ में जहाँ सबकुछ बह गया, वहाँ सदियों पुराना पत्थरों का मंदिर बिना टूटे कैसे खड़ा रहा? लोगों ने इस चट्टान को "दिव्य शिला" नाम दिया, क्योंकि उनका विश्वास था कि यह कोई सामान्य पत्थर नहीं, बल्कि स्वयं भगवान शिव का रूप था, जो अपने निवास स्थान केदारनाथ की रक्षा करने के लिए अवतरित हुए। आज भी मंदिर के पीछे यह दिव्य शिला मौजूद है। एक तरफ वैज्ञानिक इसे भौगोलिक संयोग और मंदिर की मजबूत वास्तुकला का परिणाम मानते हैं, वहीं श्रद्धालु इसे "महादेव की कृपा" कहते हैं।

यात्रा की शुरुआत

केदारनाथ की यात्रा आसान नहीं। गौरीकुंड से आगे वाहनों की अनुमति नहीं होती, और वहाँ से शुरू होता है- 16 किलोमीटर का कठिन ट्रेक। गौरीकुंड से निकलते ही सामने दिखाई देता है रास्ता जो पहाड़ों के बीच घुमावदार चढ़ाई में गायब हो जाता है। रास्ते में कहीं तीखी चढ़ाई है, कहीं पत्थरीली पगडंडी, तो कहीं झरनों से सना हुआ रास्ता। रास्ते में छोटे ढाबे, गर्म चाय, आलू पराठे, और यात्रा को आसान बना देती है। जब दूर से मंदिर की झलक दिखती है, तो थकान अपने आप गायब हो जाती है। बादल इतने नीचे होते हैं कि लगता है जैसे आप उनके बीच चल रहे हों।

जो यात्री पैदल नहीं चल सकते, उनके लिए खच्चर या पालकी की व्यवस्था भी होती है। घंटों की चढ़ाई, ठंड, सांस फूलना और थकावट – सब कुछ एक पल में गायब हो जाता है, जब बादलों के बीच से अचानक

केदारनाथ मंदिर की चोटी नज़र आती है। वह क्षण शब्दों में नहीं बयां किया जा सकता।

मंदिर के आसपास का वातावरण —

मंदिर के चारों दिशाओं में आकाश को चूमते हुए बर्फ़ से लदे पर्वत हैं।

सबसे प्रमुख हैं –

- **केदार डोम**
- **भैरव पर्वत**
- **चौराबारी ग्लेशियर**

ये पर्वत न केवल इस क्षेत्र की भौगोलिक पहचान हैं, बल्कि धार्मिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

केदार डोम, जो समुद्र तल से लगभग 6,940 मीटर ऊँचा है, मंदिर के पीछे एक प्रहरी की तरह खड़ा है –मानो स्वयं भगवान शंकर का ध्वज थामे भक्तों पर नज़र रख रहा हो। सुबह की पहली किरण जब इस पर्वत की चोटियों पर गिरती है, तो उसकी चमक से पूरा केदारनाथ स्वर्णिम हो उठता है। वह दृश्य इतना मनमोहक होता है कि आँखें पलक झपकाना भूल जाती हैं।

भैरव पर्वत, मंदिर के दक्षिण में स्थित है। केदारनाथ मंदिर से लगभग आधा किलोमीटर की ऊँचाई पर एक छोटा सा किंतु अत्यंत महत्वपूर्ण मंदिर स्थित है – भैरवनाथ मंदिर। कहा जाता है कि जब कभी इस क्षेत्र में कोई संकट आने वाला होता है, तो भैरवनाथ जी पहले से संकेत देते हैं –और उसी कारण केदारनाथ सदैव सुरक्षित रहता है। स्थानीय मान्यता है कि जब सर्दियों में बर्फ़बारी के कारण केदारनाथ मंदिर बंद हो जाता है और बाबा केदार की डोली ऊखीमठ ले जाई जाती है, तब पूरी केदारपुरी की रक्षा का दायित्व भैरवनाथ जी निभाते हैं। भैरवनाथ, भगवान शिव का ही उग्र रूप माने जाते हैं –जो बुराइयों का नाश करते हैं और धर्म की रक्षा करते हैं। यहाँ से नीचे की घाटी का दृश्य इतना अद्भुत होता है कि लगता है मानो पूरा केदारनाथ भैरवनाथ जी की दृष्टि में सुरक्षित हो।

यात्रियों का विश्वास है कि केदारनाथ के दर्शन अधूरे हैं जब तक भैरवनाथ के दर्शन न कर लिए जाएँ। कई यात्री ऊपर तक चढ़कर भैरव मंदिर में घंटा चढ़ाते हैं, और फिर वहाँ से नीचे देखते हैं – जहाँ धुंध में लिपटा केदारनाथ मंदिर किसी सपने जैसा प्रतीत होता है।

थोड़ी दूरी पर है चौराबारी ग्लेशियर, जिससे निकलने वाला पानी नीचे आकर मंदाकिनी नदी का रूप लेता है। यह वही झील थी जो 2013 की आपदा का केंद्र बनी, पर आज भी शांत होकर यह हमें याद दिलाती है कि प्रकृति का हर रूप –कभी विनाशकारी, तो कभी जीवनदायिनी है।

मंदिर के पास बहती मंदाकिनी नदी इस स्थान को और भी दिव्यता प्रदान करती है। उसका पानी इतना निर्मल और ठंडा होता है कि उसमें स्नान करने पर जैसे आत्मा तक शुद्ध हो जाती है।

नदी के तट पर बैठकर जब कोई व्यक्ति घंटों तक जल की आवाज़ सुनता है, तो लगता है मानो शिव स्वयं ध्यानमग्न होकर जप कर रहे हों। यहाँ की हवा में कुछ ऐसा है जो भीतर तक शांति पहुँचा देती है। कभी कोई साधु धूप में बैठा मंत्र जप करता है, कभी कोई यात्री चुपचाप पत्थर पर बैठा दूर पर्वतों को निहारता है। ऐसा लगता है कि यहाँ समय भी ठहर जाता है।

बदलता मौसम, बदलता दृश्य

केदारनाथ का मौसम किसी बालक के मूड की तरह बदलता है –कभी अचानक घना कोहरा छा जाता है, तो कभी बादलों के बीच से सूर्य की किरणें निकलकर मंदिर को स्वर्णिम बना देती हैं।

कभी हल्की फुहारें मंदिर की सीढ़ियों को भिगो देती हैं, तो कभी हवा इतनी ठंडी होती है कि हाथ जोड़ते ही हथेलियाँ सुन्न पड़ जाती हैं। पर यही बदलाव तो इसकी सुंदरता है –क्योंकि यहाँ हर पल प्रकृति नया रूप, नई लीला दिखाती है।

बद्रीनाथ

केदारनाथ की कठोरता के विपरीत, बद्रीनाथ में एक अलग ही सौम्यता है। जहाँ केदारनाथ में शिव की गहराई है, वहीं बद्रीनाथ में विष्णु की करुणा। यह मंदिर अलकनंदा नदी के किनारे स्थित हैढ्ढ यह "चार धामों" में से एक प्रमुख धाम है – बद्रीनाथ, द्वारका, जगन्नाथ पुरी और रामेश्वरम।

पौराणिक कथा के अनुसार, भगवान विष्णु यहाँ बदरी वृक्ष के नीचे ध्यानमग्न हुए थे।

माता लक्ष्मी ने ठंड से उनकी रक्षा के लिए बदरी (जंगली बेर) का रूप धारण किया, इसीलिए भगवान विष्णु ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि यहाँ सदैव वे उनके साथ पूजित होंगी।

इसलिए इस स्थान का नाम पड़ा – "बद्रीवन" या "बद्रीनाथ।"

बद्रीनाथ मंदिर का निर्माण आदि शंकराचार्य ने 8वीं शताब्दी में करवाया था। इससे पहले यह स्थान बौद्धों के नियंत्रण में था और वहाँ बौद्ध मठ था। आदि शंकराचार्य ने यहाँ भगवान विष्णु की मूर्ति की पुनः स्थापना की और सनातन हिंदू परंपरा को पुनर्जीवित किया। तब से यह धाम हिंदुओं का प्रमुख तीर्थस्थल बन गया। मंदिर का रंगीन शिखर, सुनहरी छत और सामने बहती अलकनंदा – ये सब मिलकर इसे एक स्वर्गीय दृश्य बनाते हैं।

बद्रीनाथ मंदिर की वास्तुकला अत्यंत सुंदर और अद्वितीय है। यह मंदिर लगभग 50 फीट ऊँचा है और इसका शिखर सुनहरे कलश से सुशोभित है।

मुख्य गर्भगृह (गर्भगृह): यहाँ भगवान विष्णु की मूर्ति विराजमान है, जो शालिग्राम पत्थर की बनी हुई है। यह मूर्ति ध्यानमग्न मुद्रा में है, जो अत्यंत मनमोहक लगती है।

मूर्ति की विशेषताः भगवान बद्रीनाथ "शेषनाग" पर विराजमान हैं, और चार भुजाओं में उन्होंने शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किए हैं।

अन्य मूर्तियाँ: गर्भगृह में नारद मुनि, कुबेर, लक्ष्मी और गरुड़ की मूर्तियाँ भी स्थापित हैं।

मंदिर के प्रवेश द्वार पर सुंदर नक्काशी और चमकीले रंगों की चित्रकारी देखने लायक होती है।

मंदिर के समीप ही "तप्तकुंड" नामक एक गर्म पानी का कुंड है, जिसका तापमान हमेशा गर्म रहता है, भले ही चारों ओर बर्फ हो। श्रद्धालु मंदिर में प्रवेश से पहले इस कुंड में स्नान करते हैं। कहा जाता है कि यह कुंड भगवान अग्नि का निवास है और इसमें स्नान करने से शरीर और मन दोनों पवित्र हो जाते हैं।

केदारनाथ की तरह बद्रीनाथ के कपाट भी नवंबर में बंद कर दिए जाते हैं।

उसके बाद भगवान बद्रीनाथ की मूर्ति को जोशीमठ में स्थापित किया जाता है, जहाँ सर्दियों में उनकी पूजा होती है।

माणा गाँव – भारत का अंतिम गाँव

उत्तराखंड के चमोली ज़िले में स्थित माणा गाँव को "भारत का अंतिम गाँव" कहा जाता है क्योंकि यह भारत-तिब्बत सीमा से ठीक पहले बसा हुआ है। समुद्र तल से लगभग 10,000 फीट की ऊँचाई पर स्थित यह गाँव बद्रीनाथ से मात्र 3 किलोमीटर की दूरी पर है। यहाँ की प्राकृतिक सुंदरता, हिमालय की बर्फ़ से ढकी चोटियाँ और अलकनंदा नदी का कल-कल बहाव, इसे स्वर्ग जैसा दृश्य प्रदान करते हैं।

माणा गाँव पौराणिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि महाभारत काल में जब पांडव स्वर्ग की ओर जा रहे थे, तो उन्होंने यहीं से अपनी यात्रा प्रारंभ की थी। यहाँ स्थित भीम पुल एक विशाल पत्थर का प्राकृतिक पुल है, जिसके बारे में कहा जाता है कि भीम ने इसे द्रौपदी के पार जाने के लिए रखा था।

इसी गाँव में स्थित व्यास गुफा में ऋषि व्यास ने महाभारत की रचना की थी, जबकि गणेश गुफा में भगवान गणेश ने वही श्लोक लिपिबद्ध किए थे। इन गुफाओं के पास बैठकर जब ठंडी हवा और हिमालय की शांति महसूस होती है, तो ऐसा लगता है मानो समय वहीं ठहर गया हो।

आज भी माणा गाँव अपनी पारंपरिक संस्कृति और गरमजोशी से भरे लोगों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के स्थानीय लोग ऊनी वस्त्र, हस्तनिर्मित वस्तुएँ और जड़ी-बूटियाँ बेचते हैं। सर्दियों में यह क्षेत्र बर्फ़ से ढक जाता है, परंतु गर्मियों में यह जगह प्रकृति और आस्था, दोनों का संगम बन जाती है।

यात्रा का अनुभव

केदारनाथ और बद्रीनाथ की यात्रा सिर्फ एक धार्मिक सफर नहीं, बल्कि एक आत्मिक साहसिक यात्रा है। रास्ते में जब पहाड़ों से बहती नदियाँ, ठंडी हवाएँ और बर्फीले रास्ते सामने आते हैं, तो हर यात्री का मन खुद से जुड़ने लगता है। चाय की भाप में घुली पहाड़ी मुस्कान, ढाबों की गरम दाल, और यात्रियों का एक-दूसरे को "हर हर महादेव" कहना – ये सब अनुभव इस यात्रा को अविस्मरणीय बनाते हैं। कई लोग कहते हैं कि जब वे मंदिर में पहुँचे, तो उन्हें ऐसा लगा मानो किसी ने भीतर से पुकारा हो । यह अनुभव भले शब्दों में न कहा जा सके, लेकिन दिल में गहराई तक बस जाता है। आज जब दुनिया भाग-दौड़ में खो गई है, तब केदारनाथ और बद्रीनाथ जैसे स्थान हमें ठहरना सिखाते हैं। यहाँ मोबाइल नेटवर्क भले कमजोर हो, पर ईश्वर से जुड़ाव सबसे मजबूत होता है। यह यात्रा मन को रीसेट कर देती है – जैसे आत्मा को नया जीवन मिल गया हो। यही कारण है कि हर साल लाखों लोग कठिनाइयों के बावजूद इन धामों तक पहुँचते हैं, क्योंकि वहाँ सिर्फ दर्शन नहीं, बल्कि शांति मिलती है। केदारनाथ और बद्रीनाथ – ये सिर्फ दो मंदिर नहीं, बल्कि दो अनुभव, दो दर्शन और दो जीवन की दिशाएँ हैं। एक हमें भीतर झाँकना सिखाता है (केदारनाथ - शिव), और दूसरा हमें करुणा से जीना सिखाता है (बद्रीनाथ - विष्णु)। जब कोई इन दोनों धामों की यात्रा करता है, तो वह सिर्फ पहाड़ों से नहीं गुजरता, बल्कि खुद के भीतर से होकर गुजरता है। इस यात्रा के अंत में आप खुद से यही कहते हैं –

"शायद भगवान दूर नहीं हैं,वे तो यहीं हैं - इन बफ़ीली चोटियों, इन शांत नदियों,

और हमारे अपने विश्वास में।"

'चित्तकोबरा' की 'मनु'

मृदुला गर्ग हिन्दी की वरिष्ठ लेखिका हैं जो जीते-जी किंवदंती बन गयी हैं, वह सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं और पर्यावरण के महत्व को भी समझती हैं, यही कारण है कि मानव-निर्मित समस्त विद्रुपताओं के प्रति उनकी लेखनी मुखर रही है. इसके साथ ही वह जबरदस्त यात्री भी हैं और तमाम व्यवधानों के बीच उनकी साहित्य-यात्रा भी अनवरत चलती रही. उनके व्यक्तित्व एवं लेखन तथा साहित्यानुराग उनके पिता के संस्कारों एवं संरक्षण में निखरा. पिता की ही तरह मृदुला जी ने भी अपने पारिवारिक दायित्वों को लेखन के साथ-साथ बड़ी खूबसूरती से संभाला.उन्होंने अपने आरम्भिक वर्षों में दिल्ली विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य भी किया और लगभग 32 वर्ष की उम्र से उन्होंने साहित्य लेखन प्रारंभ किया।

उपन्यास, कहानी संग्रह, नाटक, निबंध, व्यंग्य आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में उन्होंने लेखन किया। इसके अलावा उन्होंने इंडिया टुडे के हिंदी संस्करण में कटाक्ष नामक स्तम्भ के लिए लगातार कई वर्ष तक लेखन किया। उनका प्रारम्भिक लेखन अर्थशास्त्र से जुड़ा हुआ था, लेकिन उसके उपरांत वे सृजनात्मक लेखन की ओर अग्रसर हुई। हिन्दी में उनके दो उपन्यास काफी चर्चित हुए- कठगुलाब और चित्तकोबरा।

मृदुला गर्ग का बहुचर्चित और कुछ हद तक विवादास्पद उपन्यास 'चित्तकोबरा' की विषय-वस्तु अपने समय और समाज से काफी आगे की बात कहती है। कुछ-कुछ कंफेशन की तरह नायिका अपने जीवन, अपने अनुभव और चरित्र को अनुभूति-दर-अनुभूति खोलती चलती है. हालांकि कंफेशन को कायरता मानते हुए इसे अपने पाप का बोझ दूसरे मनुष्य के कंधे पर उतार रखने का एक उपक्रम ही मानता है रिचड. 'अब रिचर्ड कौन है, नायक या प्रतिनायक? चित्तकोबरा का कथ्य कई मामलों में दिलचस्प है। नायिका तो मनु है पर कथा का नायक कौन है? रिचर्ड, जिसके प्रेम में मनु आकंठ डूबी है? या महेश जिसे खुद से दूर जाती पत्नी (मनु) से बेबसी की हद तक चाहत है? कहानी एक अजूबा त्रिकोण रचती है, बरमूडा त्रिकोण सी रहस्यमयी।

ऐसे ही त्रिकोण पर रची दो अन्य कहानियों की ओर ध्यान जाता है - 'ऊंचाई' और 'यही सच है'. ऊंचाई कहानी में नायिका अपने पूर्व प्रेमी से हुई अचानक मुलाक़ात के बाद उसके प्रति तीव्र आकर्षण महसूस करती है और साथ ही उसके एकाकी जीवन का कारण भी कहीं-न-कहीं खुद को महसूस करती है और एक ऐसे बिन्दु पर पहुँच कर ठिठक पड़ती है जहां अपने वर्तमान और अतीत के आकर्षण के चक्रव्यूह में खुद को बुरी तरह फंसा हुआ देखती है.

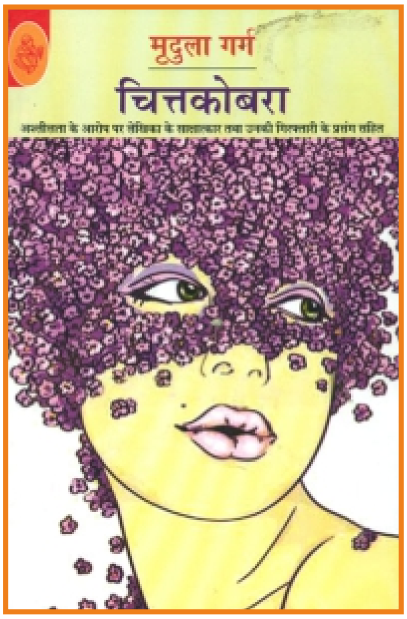

विवाह और उसके पूर्व या बाद के संबंधों का यह द्वंद्व पारंपरिक भारतीय समाज में होना कोई हैरत की बात नहीं है. यह द्वंद्व मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृति या basic instinct का, उसकी सामाजिक कन्डीशनिंग या प्रशिक्षण के बरक्स सहज प्रस्फुटन है. वह विवाह संस्था जिसमें महेश का विश्वास नहीं है, जिसे मनुतयशुदा विवाह कहती है और महेश जिसे समाज द्वारा अपनी सुरक्षा के लिए ढूंढा उपाय,उसके औचित्य पर प्रश्न खड़ा करती हैं ये कहानियाँ.

डॉ सुधा तिवारी
सहायक निदेशक

चित्तकोबरा में महेश मनु से कहता है -

'अगर समाज में रहने वाले हर पति को अपनी पत्नी से प्यार होगा और हर पत्नी को पति से, तो समाज की भला कौन परवाह करेगा? बच्चों की परवरिश बंद हो जाएगी. व्यापार-व्यवसाय ठप्प हो जाएंगे. राजनीति का भट्ठा बैठ जाएगा. बड़े-बूढ़े मर-खप जाएंगे. सभी स्त्री-पुरुष एक-दूसरे में डूबे रहेंगे और देश रसातल को चला जाएगा. प्यार होने पर और कुछ नहीं सूझता, है न?

हमारा समाज कितना सूझ-बूझ वाला है,' उसी ने कहा, 'अपनी सुरक्षा का कितना बढ़िया उपाय ढूंढ निकाला है.तयशुदा ब्याह. है न? ठीक कह रहा हूँ न मैं?'

इसी तयशुदा ब्याह के चक्र में फंसे महेश और मनु यंत्रवत बहते चले जाते हैं, समाज में वे एक आदर्श जोड़ी के रूप में आदर और प्रशंसा प्राप्त करते हैं परंतु एक नाटक के दौरान मनु की रिचर्ड से मुलाक़ात इस तय जीवन में भूचाल ले आती है। रिचर्ड और मनु दोनों ही शादीशुदा हैं और विवाहेतर संबंध में एक-दूसरे के साथ असीम सुख पाते हैं, यह बात कई हलकों में नागवार गुजरी थी।

चित्तकोबरा एक अनुभूति-परक उपन्यास है. इसके कथा का फलक बहुत विस्तार लिए हुए नहीं है पर एक-एकक्षण की सघन अनुभूति दर्ज करने में यह पीछे नहीं रही है. सोते हुए रिचर्ड का ऑर्किड के फूल में तब्दील हो जाने का दृश्य एक मनमोहक चित्र है, भले ही वहाँ मृत्यु की आशंका या भय पृष्ठभूमि में काम कर रहा है।

'कैसे खिल आया...कमरे के गहराते झुटपुटे में? जरूर कहीं कोई भगवान है...या नियति...वह ऑर्किड्स के नीचे दबा पड़ा है. उसके चेहरे का रंग ऑर्किड्स की तरह मोतिया है. बंद आँखों के नीचे जामुनी छाया है. उसके ओंठ ऑर्किड्स के दिल की तरह नीले पड़ते जा रहे हैं।'

एक उपन्यासकार अपनी कथा में बहुत सारे विषय उठाता है, विभिन्न मुद्दों पर चर्चा करता है या मुख्य कहानी के साथ-साथ अनेक उपकथाएं उपन्यास का हिस्सा हो सकती हैं, परंतु उसका एक केन्द्रीय विषय या मुद्दाजरूर होता है जिसके आस-पास सारे चरित्र एवं कथाएं गढ़ी जाती हैं. वह केन्द्रीय प्रश्न कथा का क्या है? उसी से लेखक का स्टैन्ड निर्धारित होता है. कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, मंजुल भगत, उषा प्रियंवदा, ममताकालिया आदि लेखिकाओं ने समाज की विसंगतियों एवं विद्रूपताओं को उजागर करते हुए राजनैतिक-आर्थिक मुद्दों पर भी बेबाकी से लिखा और इसके साथ ही स्त्री अस्मिता, पारिवारिक घुटन, वैयक्तिक बेचैनी को भी अपने कथा साहित्य में प्रमुख विषय बनाया. यहाँ उल्लेखनीय है कि इन सब बातों के होते हुए भी स्त्री मुक्तिका प्रश्न इनके लेखन के केंद्र में रहा.अपने कथ्य और शिल्प में मृदुला गर्ग के उपन्यास कृष्णा सोबती के करीब पड़ते हैं। लेकिन यह भी तथ्य है कि चित्तकोबरा की विषय-वस्तु स्त्री, काम एवं प्रेम होकर भी यह उपन्यास कृष्णा सोबती के 'मित्रों मरजानी' या 'डार से बिछुड़ी' के मयार को नहीं छू पाती है. नायिका के सौन्दर्य चित्रण में 'डार से बिछुड़ी'की पाशो का कोई सानी नहीं है. मित्रों जितनी मुँहजोर है उतनी ही स्वाभाविक भी, उसकी कोई अनुभूति या अभिव्यक्ति ओढ़ी हुई नहीं लगती. इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि

मनु, महेश या रिचर्ड सभी मध्यवर्गीय पात्र हैं, जो बड़े-बड़े आदर्श भारी बातों पे लहालोट हो सकता है, रोमांचित भी परंतु जब निर्णय की घड़ी आती है उसके पास कोई नायाब तरकीब होती है, एकदम ऐसा जरूरी काम जिसकी वजह से कितनी भी बड़ी पुकार को टाला जा सकता है। चित्तकोबरा की मनु पादरी रिचर्ड के काम, उसके आदर्श, परोपकार के लिए जीवनोत्सर्ग के अटल भाव की जबरदस्त कायल है, बांग्लादेश के कातर जनों की पुकार से वहाँ जाने को उद्यत हो जाती है, पर ऐन जाने के पहले अनजाने देश में अकेले छूट जाने के ख्याल से विकल हो अपने बच्चों की चिंता में शरण लेती है.मध्यवर्गीय जीवन और पात्र एक सुरक्षित जीवन एवं भौतिक सुविधाओं को छोड़कर अजाने जोखिम की ओर अक्सर उन्मुख नहीं होते. खैर, जो नहीं है उसे छोड़ उपन्यास में जो है अगर उसकी बात की जाए, तो जैसा कि लेखिका ने स्वयं भूमिका में कहा है 'जो लिखा है उसे उपन्यास कहते मुझे संकोच हो रहा है. जिस तरह यह लिखा गया, याद करके हँसी आती है. एक कहानी थी जो मेरे अंतर्मन में फैलती-सिकुड़ती रहती थी. फिर... एक दिन उस कहानी के अंतराल का एक-एक क्षण अपनी कड़ी से टूटकर बिखर गया.'लेकिन इस बिखराव से भी कुछ अंश अत्यंत कलात्मक बन पड़े हैं-

च्देखो, चाँद के चारों तरफ घेरा है. नीली रोशनी का...देखा?'

...'पर आदमी जब खुश होता है तो नाचता है - चाँद के घेरे के नीचे. खुले में. आत्मविभोर होकर। एक आत्मा

जन्म लेती है उसके भीतर।

...आवाजों के घेरे में कैद मैं कमरे में चली आयी हूँ.महेश झपटकर आगे आ गया है.

'क्या हो गया था? उसने पूछा है. प्यार से, आशंका से -'तबीयत तो ठीक है न? बाहर क्यों चली गयी थीं?'

'चाँद के चारों तरफ नीली रोशनी का घेरा है'।'(चित्तकोबरा, पृ.सं. 14-15)

और कॉकटेल पार्टी की शोर में, नाचते हुए जोड़ों के बीच मनु असीम आश्वस्ति का अनुभव करते हुए कहती है -'अच्छा ही है, इनमें से कोई नहीं जानता कि मैंने चाँद के नीले घेरे को शीशे में उतार लिया है और शीशा मेरे पर्स में महफूज है. मैं कहीं भी रहूँ, वह मेरे साथ होगा।'

इस उपन्यास की खूबसूरती इसमें है कि कथा के सूत्र संवादों से खुलते हैं। किरदारों की बातें, कल्पनाएं, चुहल और आशंकाओं की डोर पाठक का हाथ थामे कथा में उसे बहाये लिए जाती है.चित्तकोबरा की एक विशेषता इस तथ्य में भी है कि जहां 'ऊंचाई' और 'यही सच है' के पात्र वर्तमान एवं भविष्य के प्रेम में ही उलझे किसी एक जीवन को अंततः चुनते हैं चित्तकोबरा की नायिका 'मनु' सृजन को चुनती है.इस मायने में वह वस्तुतः राहों की अन्वेषी है। इस अर्थ में चित्तकोबरा उपन्यास मृदुला गर्ग के एक अन्य उपन्यास 'उसके हिस्से की धूप' की अगली कड़ी है, क्योंकि दोनों ही उपन्यासों में नायिका के द्वन्द्व की समाप्ति साहित्य-सृजन में होती है। नैतिकता-अनैतिकता के परे स्वच्छंद स्त्री-पुरुष संबंधों को प्रस्तुत करना ही उपन्यास का ध्येय है और यही प्रस्तुति इसे विवादों के घेरे तक ले आयी है. फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद का सिद्धांत भी इस लेखन की कड़ी रही है। 'उसके हिस्से की धूप' तीन पात्रों - मनीषा, जितेन और मधुकर के इर्द-गिर्द बुनी गयी है. इस उपन्यास में पति जितेन की व्यस्तता के कारण पत्नी मनीषा दाम्पत्येतर संबंध की तरफ़ बढ़ती है और नौबत तलाक तक पहुँच जाती है. परंतु विवाह मनीषा की स्वतंत्रता का पर्याय नहीं बनता, वस्तुतः वह हो भी नहीं सकता। 'स्व' की तलाश करती मनीषा को निजता का अनुभव तब होता है जब उसकी अपनी कृति का सृजन होता है।

मृदुला जी की कहानियों में स्त्री, अस्तित्व-बोध एवं प्रतिरोध की प्रक्रिया से सीधे तौर पर जूझती हुई दिखायी पड़ती है, यह केवल पुरुष का ही entitlement क्यों हो कि वह अनुभूति से गुजरने के बाद निर्णय ले, स्त्री भी अनिर्णय की इस प्रक्रिया से गुजर सकती है। लेखिका एक प्रश्न और करती हैं चित्तकोबरा के माध्यम से कि आखिर संसार के अलग-अलग धर्मों की मुख्तलीफ़ नागरिक-संहिताएं हैं परंतु क्या कारण है कि सब की सब मूल रूप से स्त्री-द्वेषी हैं।

आधुनिक युग में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस

आधुनिक युग में 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' (AI) या कृत्रिम बुद्धिमत्ता केवल एक तकनीकी शब्द नहीं रह गया है, बल्कि यह चौथी औद्योगिक क्रांति का सबसे शक्तिशाली स्तंभ बनकर उभरा है। कंप्यूटर विज्ञान की यह वह शाखा है जो मशीनों को मानवीय बुद्धिमत्ता के समान सोचने, समझने, सीखने और निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करती है। आज हम एक ऐसे संक्रमण काल में जी रहे हैं जहाँ हमारे जीवन का हर छोटा-बड़ा पहलू प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से AI से प्रभावित है। सुबह उठकर स्मार्टफोन को चेहरे से अनलॉक करने से लेकर रात को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर अपनी पसंद की फिल्में देखने तक, AI अदृश्य रूप से हमारी जीवनशैली को सुगम और स्मार्ट बना रहा है।

AI का विकासक्रम अत्यंत रोचक रहा है। इसकी परिकल्पना 1950 के दशक में एलन ट्यूरिंग और जॉन मैकार्थी जैसे दूरदृष्टा वैज्ञानिकों ने की थी। शुरुआती दौर में यह केवल सरल गणनाओं और शतरंज जैसे खेलों तक सीमित था, लेकिन वर्तमान में 'बिग डेटा' और उच्च क्षमता वाले प्रोसेसर की उपलब्धता ने इसे असीमित शक्ति प्रदान कर दी है। आज का AI 'मशीन लर्निंग' और 'डीप लर्निंग' जैसी तकनीकों पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि मशीनें अब केवल प्रोग्राम किए गए निर्देशों का पालन नहीं करतीं, बल्कि वे अपने अनुभवों और उपलब्ध डेटा से खुद को परिष्कृत (Refine) करना सीख रही हैं।

आर्थिक और औद्योगिक दृष्टिकोण से देखें तो AI ने उत्पादन और सेवा क्षेत्रों की परिभाषा बदल दी है। 'स्मार्ट मैन्युफैक्चरिंग' के माध्यम से कारखानों में होने वाली गलतियों की संभावना न्यूनतम हो गई है। रोबोटिक्स और ऑटोमेशन ने जटिल कार्यों को न केवल तेज़ बनाया है, बल्कि उन्हें अधिक सुरक्षित भी कर दिया है। ई-कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग के क्षेत्र में AI ग्राहकों के व्यवहार का विश्लेषण कर उन्हें व्यक्तिगत अनुभव प्रदान कर रहा है। इससे न केवल व्यापारिक मुनाफा बढ़ा है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था को एक नई गति मिली है, जिससे विकास के नए प्रतिमान स्थापित हो रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में AI एक संजीवनी बनकर उभरा है। चिकित्सा जगत में AI का सबसे बड़ा लाभ 'सटीक निदान' (Precision Diagnosis) में देखने को मिलता है। आधुनिक एल्गोरिदम अब एक्स-रे और एमआरआई स्कैन की जांच डॉक्टरों से भी अधिक सूक्ष्मता से कर सकते हैं, जिससे कैंसर और हृदय रोग जैसी घातक बीमारियों का शुरुआती चरण में पता लगाना संभव हो गया है। इसके अलावा, नई दवाओं की खोज (Drug Discovery) में लगने वाले वर्षों के समय को AI ने अपनी गणना शक्ति से काफी कम कर दिया है। महामारी के दौरान भी AI ने संक्रमण के प्रसार का पूर्वानुमान लगाने और वैक्सीन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

शिक्षा और कृषि जैसे क्षेत्रों में भी AI का प्रभाव क्रांतिकारी है। शिक्षा में यह 'पर्सनलाइज्ड लर्निंग' को बढ़ावा दे रहा है, जहाँ हर छात्र अपनी क्षमता और गति के अनुसार सीख सकता है। वहीं कृषि में, भारतीय किसानों के लिए AI-आधारित समाधान वरदान साबित हो रहे हैं। ड्रोन के माध्यम से खेतों की निगरानी, मिट्टी की गुणवत्ता का परीक्षण और मौसम का सटीक पूर्वानुमान किसानों को बेहतर फसल उगाने और संसाधनों की बर्बादी रोकने में मदद कर रहा है। यह तकनीक न केवल उत्पादकता बढ़ा रही है, बल्कि भविष्य की खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों का समाधान भी प्रस्तुत कर रही है।

हालाँकि, इस तकनीकी उन्नति के साथ कुछ गंभीर चुनौतियाँ और नैतिक प्रश्न भी जुड़े हैं। सबसे बड़ी चिंता रोजगार के विस्थापन (Job Displacement) को लेकर है। आशंका जताई जा रही है कि स्वचालन के कारण कई पारंपरिक नौकरियां समाप्त हो जाएंगी, जिससे समाज में आर्थिक असमानता बढ़ सकती है। इसके साथ ही, डेटा गोपनीयता (Privacy) और सुरक्षा एक बड़ा मुद्दा है। AI को प्रभावी बनाने के लिए भारी मात्रा में व्यक्तिगत डेटा की आवश्यकता होती है,

कुलदीप सैनी, लेखाकार

जिसके दुरुपयोग का खतरा हमेशा बना रहता है। 'डीपफेक' जैसी तकनीकें आज समाज में भ्रामक सूचनाएं फैलाने और साइबर अपराधों को अंजाम देने का जरिया बन रही हैं, जो वैश्विक सुरक्षा के लिए एक नई चुनौती है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस मानव सभ्यता के लिए एक द्विधारी तलवार के समान है। यह हमारे लिए विकास के असीम द्वार खोलता है, लेकिन इसके अनियंत्रित उपयोग के परिणाम घातक भी हो सकते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम एक मजबूत 'नैतिक ढांचा' (Ethical Framework) तैयार करें जो इस तकनीक के दुरुपयोग को रोक सके। हमें AI को मानव के प्रतिस्थापक (Replacement) के रूप में नहीं, बल्कि एक सहयोगी (Augmentation) के रूप में देखना चाहिए। यदि हम बुद्धिमानी और जिम्मेदारी के साथ इस तकनीक को अपनाते हैं, तो निश्चित रूप से AI आधुनिक युग को एक ऐसी नई ऊँचाई पर ले जाएगा जहाँ मानवता अधिक समृद्ध, स्वस्थ और सुरक्षित होगी।

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी संस्थाएँ: भूमिका, स्वरूप और महत्त्व

हिन्दी भाषा आज केवल भारत की राजभाषा ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में बोली, समझी और पढ़ाई जाने वाली एक सशक्त भाषा बन चुकी है। इस विकास के पीछे अनेक राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का निरंतर प्रयास निहित है, जिन्होंने हिन्दी के प्रचार-प्रसार, शिक्षण, अनुसंधान तथा सांस्कृतिक संवाद को सुदृढ़ किया है। हिंदी का वैश्वीकरण उस ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें भारत की सांस्कृतिक पहुँच, प्रवासी समुदायों की भूमिका और सूचना-प्रौद्योगिकी का प्रभाव एक साथ जुड़ा हुआ है। वैश्विक संचार की इस सदी में हिंदी का स्थान केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान और शिक्षा जैसे विविध क्षेत्रों में प्रयोग की जा रही है। अतः हिंदी के इस अंतरराष्ट्रीय रूप का गहन अध्ययन आवश्यक हो जाता है।हिंदी विश्व की प्रमुख भाषाओं में से एक है। हिंदी बोलने वालों की संख्या विश्व में लगभग 60 करोड़ से अधिक है, इस तरह यह विश्व की तृतीय सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनती है। मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, त्रिनिदाद, दक्षिण अफ्रीका, अमेरिका, कनाडा और यूनाइटेड किंगडम आदि देशों में हिंदीभाषी समुदायों की सशक्त उपस्थिति है। प्रवासी भारतीयों ने हिंदी को न केवल जीवित रखा, बल्कि उसे स्थानीय संस्कृतियों में समाहित भी किया। विश्व हिंदी सम्मेलन, भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) तथा संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर हिंदी के प्रयोग से उसका अंतरराष्ट्रीय महत्व और भी बढ़ा है।

सूचना प्रोद्योगिकी एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता के युग में हिंदी ने नए माध्यमों के द्वारा अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई है। सोशल मीडिया, ओटीटी प्लेटफॉर्म, यूट्यूब, ई-पत्रकारिता और ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से हिंदी सामग्री का वैश्विक प्रसार अत्यधिक हुआ है। गूगल, माइक्रोसॉफ्ट तथा अन्य तकनीकी कंपनियों द्वारा हिंदी का स्थानीयकरण किए जाने से यह इंटरनेट की प्रमुख भाषाओं में सम्मिलित हो चुकी है। आधुनिक डिजिटल माध्यमों में यह केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं बल्कि शैक्षणिक, वैज्ञानिक और तकनीकी विमर्श की भी भाषा बन रही है। हिन्दी भाषा के विकास में अनेक राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं का योगदान है।

राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी संस्थाएँ

भारत में हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए कई संस्थाएँ सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। इनमें प्रमुख हैं–

(क) केंद्रीय हिंदी निदेशालय

यह संस्था हिन्दी के मानकीकरण, शब्दावली निर्माण तथा प्रकाशन कार्यों में अग्रणी है। यह विभिन्न योजनाओं के माध्यम से हिन्दी शिक्षण को बढ़ावा देती है और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामग्री उपलब्ध कराती है। यह संस्था हिन्दी को सरल, मानकीकृत और व्यवहारिक बनाकर जनसामान्य तथा विद्यार्थियों तक पहुँचाती है।

यह संस्था 1960 में भारत सरकार द्वारा स्थापित की गयी, जो शिक्षा मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत। यह संस्था हिन्दी को सरल, मानकीकृत और व्यवहारिक बनाकर जनसामान्य तथा विद्यार्थियों तक पहुँचाती है। निदेशालय के मुख्य कार्य हैं-

- हिन्दी की मानक शब्दावली का निर्माण
- हिन्दी भाषा की पाठ्य सामग्री एवं पुस्तकों का प्रकाशन
- हिन्दी शिक्षण योजनाओं का संचालन

डॉ सुधा तिवारी
सहायक निदेशक

(ख) केंद्रीय हिंदी संस्थान

आगरा स्थित यह संस्थान हिन्दी शिक्षण एवं प्रशिक्षण का प्रमुख केंद्र है। यहाँ देश-विदेश के छात्रों को हिन्दी भाषा का व्यवस्थित प्रशिक्षण दिया जाता है तथा भाषा-शोध को प्रोत्साहित किया जाता है। यह संस्था हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाने में सेतु का कार्य करती है, विशेषकर विदेशी विद्यार्थियों के माध्यम से। संस्थान की स्थापना 1960 में आगरा में हुई तथा यह शिक्षा मंत्रालय के अधीन कार्यरत है। संस्थान की मुख्य भूमिका है -

- देश-विदेश के विद्यार्थियों को हिन्दी शिक्षण
- हिन्दी भाषा एवं साहित्य पर शोध
- शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम

(ग) राजभाषा विभाग

राजभाषा संबंधी सांविधानिक और कानूनी उपबंधों का अनुपालन सुनिश्चित करने और संघ के सरकारी काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के एक स्वतंत्र विभाग के रूप में जून, 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई थी । गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत यह विभाग भारत सरकार के मंत्रालयों एवं कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए नीतियाँ बनाता और उनका क्रियान्वयन सुनिश्चित करता है। संघ की राजभाषा नीति के अंतर्गत राजभाषा अधिनियम, नियम एवं अन्य आदेशों के समुचित कार्यान्वयन एवं हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना इसका मुख्य उद्देश्य है। अपने दायित्वों का निर्वहन यह विभाग विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से करता है। राजभाषा के प्रसार के लिए विभाग राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, हिन्दी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार आदि शिखर पुरस्कारों की व्यवस्था करता है। इसके साथ ही, हिन्दी को अखिल भारतीय स्तर पर प्रसारित करने के लिए विभाग प्रत्येक वर्ष अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन करता है, जो देश के विभिन्न भागों में प्रत्येक वर्ष आयोजित की जाती हैं। यह प्रत्येक वर्ष क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलनों का आयोजन भी करता है। शिक्षण-प्रशिक्षण, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा के संवर्द्धन के अपने दायित्व के निर्वहन के प्रति विभाग प्रतिबद्ध है।

भारत सरकार (कार्य आबंटन) नियम, 1961 के अनुसार, राजभाषा विभाग को निम्न कार्य सौंपे गए हैं -

(1) संविधान में राजभाषा से संबंधित उपबंधों तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 (1963 का 19) के उपबंधों का कार्यान्वयन, उन उपबंधों को छोड़कर जिनका कार्यान्वयन किसी अन्य विभाग को सौंपा गया है ।

(2) किसी राज्य के उच्च न्यायालय की कार्यवाही में अंग्रेजी भाषा से भिन्न किसी अन्य भाषा का सीमित प्रयोग प्राधिकृत करने के लिए राष्ट्रपति का पूर्व अनुमोदन।

(3) केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए हिंदी शिक्षण योजना और पत्र-पत्रिकाओं और उससे संबंधित अन्य साहित्य के प्रकाशन सहित संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों के लिए केंद्रीय उत्तरदायित्व।

(4) संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रगामी प्रयोग से संबंधित सभी मामलों में समन्वय, जिनमें प्रशासनिक शब्दावली, पाठ्य विवरण, पाठ्य पुस्तकें, प्रशिक्षण पाठ्यक्रम और उनके लिए अपेक्षित उपस्कर (मानकीकृत लिपि सहित) शामिल हैं।

(5) केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा का गठन और संवर्ग प्रबंधन।

(6) केंद्रीय हिंदी समिति से संबंधित मामले।

(7) विभिन्न मंत्रालयों/विभागों द्वारा स्थापित हिंदी सलाहकार समितियों से संबंधित कार्य का समन्वय।

(8) केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो से संबंधित मामले।

(9) हिंदी शिक्षण योजना सहित केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान से संबंधित मामले।

(10) क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों से संबंधित मामले।

(11) संसदीय राजभाषा समिति से संबंधित मामले।

(घ) साहित्य अकादेमी

यह संस्था हिन्दी सहित भारतीय भाषाओं के साहित्य के विकास हेतु कार्य करती है। यह साहित्यिक पुरस्कार, संगोष्ठियों एवं प्रकाशन के माध्यम से हिन्दी साहित्य को समृद्ध बनाती है। प्रत्येक वर्ष फरवरी माह में अकादमी सप्ताहव्यापी साहित्योत्सव का आयोजन करती है। 1954 में भारत सरकार द्वारा स्थापित यह संस्था मुख्यतः निम्नलिखित क्षेत्रों में संलग्न है -

- साहित्यिक कृतियों का प्रकाशन
- पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान करना
- साहित्यिक संगोष्ठियों का आयोजन

(ङ) दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा

महात्मा गांधी की प्रेरणा से स्थापित यह संस्था दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विशेष रूप से कार्यरत है। वर्ष 1918 में इस सभा की स्थापना महात्मा गांधी की प्रेरणा से हुई। अहिन्दी भाषी क्षेत्रों में हिन्दी का विस्तार कर यह संस्था राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करती है। यह निम्नलिखित क्षेत्रों में मुख्य रूप से सक्रिय है-

- दक्षिण भारत में हिन्दी शिक्षण
- परीक्षा एवं प्रमाणन
- प्रचार-प्रसार कार्यक्रम

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी संस्थाएँ

वैश्विक स्तर पर हिन्दी के विस्तार में भी अनेक संस्थाओं का महत्वपूर्ण योगदान है–

(क) विश्व हिंदी सचिवालय

मॉरीशस में स्थित यह संस्था हिन्दी को अंतरराष्ट्रीय मंच पर स्थापित करने के उद्देश्य से कार्य करती है। यह विभिन्न देशों में हिन्दी से संबंधित गतिविधियों का समन्वय करती है। 2008 में भारत और मॉरीशस सरकार के सहयोग से स्थापित यह संस्था हिन्दी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्थापित करने में केंद्रीय भूमिका निभाती है। संस्था निम्नलिखित क्षेत्रों में सक्रिय है-

- वैश्विक स्तर पर हिन्दी का प्रचार
- विभिन्न देशों की हिन्दी गतिविधियों का समन्वय
- शोध एवं प्रकाशन

(ख) विश्व हिंदी सम्मेलन

यह सम्मेलन हिन्दी भाषा के वैश्विक स्वरूप पर विचार-विमर्श का प्रमुख मंच है, जिसका आयोजन विदेश मंत्रालय भारत सरकार द्वारा किया जाता है। इसमें विश्वभर के विद्वान और हिन्दी प्रेमी भाग लेते हैं। प्रथम सम्मेलन 1975 में आयोजित हुई, तत्पश्चात नियमित अंतराल पर सम्मेलन का आयोजन होता रहा है। यह सम्मेलन हिन्दी को वैश्विक पहचान दिलाने और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने का प्रमुख माध्यम है। इसका मुख्य योगदान है -

- हिन्दी भाषा पर वैश्विक विमर्श
- विद्वानों का संवाद मंच
- नीतिगत सुझाव

(ग) भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)

यह संस्था विदेशों में हिन्दी एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसके माध्यम से अनेक विदेशी विश्वविद्यालयों में हिन्दी अध्ययन की व्यवस्था की जाती है।

(घ) विदेशी विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग

विश्व के अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में हिन्दी भाषा और साहित्य का अध्ययन एवं शोध किया जाता है, जिससे हिन्दी का वैश्विक विस्तार निरंतर हो रहा है।

(च) संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations) में हिन्दी

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी का प्रश्न केवल भाषा का नहीं, बल्कि वैश्विक शक्ति-संतुलन, सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व और कूटनीतिक प्रभाव का विषय है। इस विषय पर भारत सरकार काफी लंबे समय से प्रयासरत है। संयुक्त राष्ट्र संघ की 6 आधिकारिक भाषाएं हैं - अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पेनिश, रूसी, चीनी और अरबी। हालाँकि, हिन्दी भाषा इस संस्था की आधिकारिक भाषा के रूप में शामिल नहीं है, परंतु इसका प्रयोग निम्नलिखित कार्यों में निरंतर होता है-

क) समाचार बुलेटिन (UN News Hindi)

ख) सोशल मीडिया सामग्री

ग) कुछ भाषणों के अनुवाद

राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय यह हिन्दी संस्थाएँ हिन्दी के विकास की रीढ़ हैं। जहाँ राष्ट्रीय संस्थाएँ भाषा के प्रशासनिक, शैक्षिक एवं साहित्यिक स्वरूप को सुदृढ़ करती हैं, वहीं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ हिन्दी को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित करने का कार्य करती हैं। इन संस्थाओं के संयुक्त प्रयासों से हिन्दी आज एक वैश्विक भाषा बनने की दिशा में अग्रसर है।

बड़ी दीदी का अधिकार

विक्रम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

आजकल जैसे फ़ोन पर 'रील' देखने का चलन बढ़ गया है, मैं भी कुछ समय के लिए इस चलन और इसकी लत का शिकार हो गया था। मैं भी बहुत रील देखने लगा था, लेकिन अब मैंने इसका उपयोग कम कर दिया है।

हुआ यूं कि मैं एक रील देख रहा था, जिसमें एक माँ अपने छोटे बच्चे को दवाई पिलाने की कोशिश कर रही थी। जैसे कि कड़वी दवाई पीना बच्चों को बिल्कुल पसंद नहीं होता, माँ उसके पीछे कटोरी और चम्मच लेकर घूमतीं, कभी प्यार से पुचकारतीं पर हर बार वह बच्चा दवाई नहीं पीता और उसे गिरा देता है। यह सब उसकी बड़ी दीदी देख रही होती है और उसे गुस्सा आ जाता है। वह माँ के हाथ से चम्मच लेती है, उसमें दवाई भरती है और उसका छोटा भाई बिना एक शब्द बोले वह कड़वी दवाई एक घूँट में पी लेता है । माँ हैरानी से दोनों को देखती है । आज उस रील से अहसास होता है कि भाई-बहन का रिश्ता कितना अनोखा होता है – जहाँ कभी-कभी एक बड़ी बहन, माँ की भी भूमिका बड़ी सहजता और जिम्मेदारी से निभा देती है और परिवार के दूसरे सदस्यों को इसका एहसास भी नहीं होता । इस क्लिप को देखते-देखते मेरे मस्तिष्क में धूमिल पड़ी एक याद ताज़ा हो गई, जो मन के पटल पर उभर कर आई। बात तब की है जब मैं छोटा था। उस साल दिवाली पर मिले कुछ रुपयों ने मेरे भीतर ढेरों अरमान जगा दिए थे। कई दिनों तक उधेड़बुन चलती रही कि इन रुपयों से क्या लिया जाए? आखिर मेरा मन उन कांच की गोलियों पर आ टिका, जिन्हें मैं रोज़ स्कूल से आने के बाद सरपंच की बैठक के सामने, उस कच्चे चौंतरे पर बच्चों को खेलते देखता था।

अगले ही दिन मेरी जेब कंचों से भरी थी। उन कंचों की खनक मेरे लिए किसी संगीत से कम नहीं थी। पर उस दिन देर होने के कारण मैं खेल नहीं पाया, बस घर में अपनी भरी हुई जेबें खडखड़ाकर दीदी के सामने इतराता रहा।

अगले दिन स्कूल से लौटते ही मैं फिर उसी चौंतरे पर पहुँच गया । अपनी जेबों में हाथ डालकर कंचों को खड़खड़ाते हुए मैं वहां से गुज़रा, तो एक बड़े लड़के की नज़र मुझ पर पड़ी। उसने मुझे खेलने के लिए पूछा। मैंने हिचकिचाते हुए कहा, "तुम तो मुझसे बड़े हो, मेरे सारे कंचे जीत लोगे" पर उसकी बातों के जाल में मैं उलझ गया। उसने भरोसा दिलाया कि जीत मेरी भी हो सकती है।

खेल शुरू हुआ। पहली ही बाजी में ही मैं 10-12 कंचे हार गया। अब उन हारे हुए कंचों को वापस पाने की ऐसी धुन सवार हुई कि मैं हारता गया और खेलता गया। हमारी वह बाजी किसी 'शकुनी और युधिष्ठिर' के पांसों के खेल जैसी हो गई थी। न तो मैं अपने कंचे हारकर पीछे हट पा रहा था, न वह जीत जाने के बाद रुक रहा था। मुझे अपनी जीत पर संशय था, पर उसे अपनी निपुणता पर पूरा भरोसा। देखते ही देखते मेरी जेब खाली हो गईं और वह मेरे सरे कंचे जीत गया ।

जब मैं सारे कंचे हार गया, तब मुझे एहसास हुआ कि मेरी जेब तो खली हो गई । मैंने उससे अपने कंचे वापस मांगे, उसे चालाक कहा, पर वह तो माहिर खिलाडी था। वह मुझे अनसुना कर दूसरे बच्चे को फंसाने निकल पड़ा। मैं सारे कंचे हार कर, मुँह लटकाए घर लौटा।

घर में घुसते ही मेरी बड़ी दीदी की नज़र मुझ पर पड़ी । उसने तुरंत पूछा, "मुँह क्यों लटका रखा है? और वे कंचे कहाँ गए जिनकी खनक कल पूरे घर में गूँज रही थी?"

आँसुओं भरी आँखों से मैंने पूरी कहानी उसे बता दी। दीदी उठ कर चल पड़ी और उसने बस इतना ही कहा, "चल, देखूँ तो कौन है वह जो मेरे भाई के कंचे नहीं दे रहा।" हम दोनों तुरंत चौंतरे पर पहुँचे। मैंने उस लड़के की तरफ इशारा किया। दीदी ने देखा तो वह दीदी की कक्षा का लड़का निकला।

दीदी ने उसे कड़े शब्दों में फटकारा, "तुम्हें शर्म नहीं आती अपने से छोटे बच्चों के साथ ऐसी हेरा-फेरी करते हुए? खेलना है तो अपनी उम्र वालों के साथ खेलो।" दीदी के रौब और गुस्से के आगे वह सहम गया। दीदी ने कहा मेरे भाई के कंचे वापिस करो। बड़ी मुश्किल से उसने जेब से कंचे निकाले। जैसे ही उसने हाथ आगे बढ़ाया, मेरी आँखों में चमक आ गई। मैं तुरंत बोल पड़ा– "यह पीला वाला मेरा है, यह नीला और यह पनियल भी !" उसने कुछ कंचे बदलकर ही सही, पर मुझे मेरे कंचे वापस कर दिए।

मैं दीदी का हाथ पकड़कर घर वापस आया। उस दिन कंचे वापस मिलने की खुशी से कहीं बड़ी खुशी यह थी कि मेरे पास एक ऐसी दीदी है जो हर मुश्किल में मेरे साथ खड़ी है। उस दिन के बाद मैंने कभी किसी बड़े लड़के के साथ कंचे नहीं खेले और अपनी हमउम्र बच्चों के साथ ही कंचे खेले।

आज मोबाइल पर वह रील देखते ही, स्मृतियों के पटल पर जमी वह धूल उड़ गई और यह धुंधली सी याद अनायास ही, पर फिर से ताज़ा होकर, चेहरे पर मुस्कान देकर कागज़ पर उतर आई।

बिहार की बात निराली है

नितीश कुमार, लेखाकार

बिहार की बात निराली है,
इतिहासों की रखवाली है।
गंगा-कोसी की धरती ये,
ज्ञान-ध्यान की थाली है।
यहाँ मगध की गाथाएँ हैं,
बुद्ध-महावीर की छायाएँ हैं।
नालंदा, विक्रमशिला जैसे,
शिक्षा की अमर कथाएँ हैं।
लिट्टी-चोखा की खुशबू है,
सत्तू में जान बसाई है।
खीर-मखाना, ठेकुआ जैसा,
मिठास में प्रेम समाई है।
छठ की पूजा यहाँ निराली,
सूरज को अर्घ्य चढ़ाया जाता।
धोती-साड़ी, सूप-साँचे में,
श्रद्धा का दीप जलाया जाता।
गाँव-नगर की सादगी देखो,
बोलचाल में मिठास पाओ।
भोजपुरी, मैथिली, मगही,
हर भाषा में अपनापन लाओ।
खेतों में हरियाली लहराए,
पलायन की पीड़ा भी सहे।
पर फिर भी आगे बढ़ता है,
हर मुश्किल को हँसकर कहे।
बोधगया की शांति बताती,
ज्ञान कहाँ से उपजता है।
राजगीर, पटना, वैशाली से,
इतिहास नया सजता है।
बिहार वो धरती कहलाए,
जहाँ सूरज खुद शीश झुकाए।
गंगा बहती गर्व लिए,
कोसी भी अपनी धारा सजाए।
इतिहासों की गोदी में है,
अशोक जहाँ से निकले थे।
बुद्ध ने ध्यान लगाया यहीं,
ज्ञान के दीपक चमके थे।
नालंदा की राखें कहतीं,
शब्दों की वो ज्वाला थी,
विद्या के जिस मंदिर में,
हर देश से रेला आया था।
महावीर की भूमि ये प्यारी,
अहिंसा की जिसने अलख जगाई।
राजगीर की वादियों में,
शांति ने पगडंडी बनाई।
वैशाली की गणतंत्र गाथा,
दुनिया को राह दिखाने वाली।
जहाँ अम्बपाली की मुस्कान,
इतिहास की रचना कर डाली।
पाटलिपुत्र से पटना बना,
नाम बदला पर रुतबा वही।
कुशल प्रशासक, नेता, वीर,
दुनिया ने सब कुछ देखा यहीं।
खेतों की सोंधी खुशबू में,
मेहनत की स्याही रचती है।
हाथों में हल, आँखों में सपना,
मिट्टी से किस्मत चखती है।
सत्तू, लिट्टी और ठेकुआ,
ना केवल स्वाद, ये भाव है।
हर बाइट में माँ का दुलार,
हर कौर में गाँव का चाव है।
बिहार की मिठास अनोखी।
छाछ, दाल-भात और चोखा,
हर थाली में है दिल की धोखी।
भोजपुरी की बिंदास बोली,
मिथिला की कोमल मिठास।
अंगिका की संजीवनी वाणी,
मगही में गूँजे प्रेम-सन्देश खास।

छठ मईया की जयकारों से,
पूरा बिहार गूँजता है।
जल, व्रत, अर्घ्य और नियम से,
हर दिल-मन शुद्ध होता है।
सोनपुर का पशु मेला,
सदियों से चला आ रहा।
हाथियों के बाजार में,
इतिहास भी हँसता-गाता रहा।
कोसी की तबाही देखी है,
फिर भी खड़ा हुआ बिहार।
हर बार टूटा, हर बार जुड़ा,
अद्भुत है इसका आत्म-संभार।
संघर्षों की पाठशाला है,
कभी पलायन, कभी राजनीति।

पर जहाँ भी बिहारी जाए,
वो चमके अपनी पहचान से सजी।
आज भी ये धरती देती है,
आईएएस, इंजीनियर, कवि।
देश-विदेश में झंडा गाड़ें,
बिहारी कभी पीछे न हटी।
पटना की सड़कों से लेकर,
गाँव की चौपालों तक,
हर बात में गर्मी है थोड़ी,
पर प्यार है हर इक पल तक।
यहाँ के लोग सरल-सजीव,
संस्कारों की मिसाल हैं।
दिल से सीधे, बातों से तीखे,
पर भावना में बेहाल हैं।

कभी गरीबी का तमगा मिला,
कभी बदनाम किया गया।
पर जिसने भीतर झाँक लिया,
वो बिहार का कायल हो गया।
तो आइए इस बिहार को जानें,
केवल नाम से नहीं, काम से।
इसकी साँसों में जो बसी है,
उसे समझें, आत्म-सम्मान से।
बिहार ना केवल धरती है,
ये भावना, गर्व, कहानी है।
जो जान गया इसकी मिट्टी को,
वो समझे क्या ज़िंदगानी है।

बद्री-केदार की राह में

थोड़ी ठंड, थोड़ा रोमांच,
दिल में आस्था का एक दीपक प्रज्वलित।
निकला मैं पहाड़ों की गोद में,
जहाँ हर सांस में बसता है भक्ति का गीत।
सुबह की पहली किरन ने जब कंधे थपथपाए,
तो लगा मानो हिमालय खुद बुला रहा हो।
घुमावदार रास्तों पर चढ़ते हुए,
हर मोड़ पर एक नई कहानी बना रहा हो ।
केदारनाथ की ओर बढ़ा तो रास्ता और कठिन,
पर हर पत्थर, हर मोड़ में शिव का प्रकाश था।
नीचे घाटी, ऊपर आकाश,
बीच में "हर हर महादेव" का जाप था।
कभी बादल छू लेते थे चेहरे को,
तो कभी हवा कानों में भजन गुनगुनाती थी।
नीचे बहती मंदाकिनी की सरसराहट,
जैसे कह रही हो – "चलो, मंज़िल बुलाती थी ।"
पत्थरों पर पड़े कदमों की थकान,
हर यात्री के चेहरे पर मुस्कान,
पर मन में उत्साह का कोई अंत नहीं।
हर यात्री के चेहरे पर वही चमक जैसे दिखा हो खुद भगवान।
सड़क के किनारे चाय की छोटी दुकानें,
जहाँ थके मुसाफ़िर मुस्कराते हैं।
एक कप गरम चाय, और पास बहती नदी
जैसे पहाड़ भी गीत गुनगुनाते हैं।
आगे बर्फ की चादर बिछी थी,
सफेद, निर्मल, जैसे ईश्वर का वस्त्र लगती थी ।
पैर फिसले कई बार, पर मन नहीं डिगा,
क्योंकि हर ठोकर भी यहाँ प्रसाद लगती थी।
जब दूर से केदरीनाथ मंदिर की झलक दिखी,
तो आँखों में श्रद्धा झिलमिलाई थी।
घंटियों की ध्वनि, आरती का स्वर,
मन की हर थकान मुस्कुराई थी।
कभी धुंध ने सब कुछ ढक लिया,
तो लगा, जैसे प्रभु ने चादर तान ली थी।
और जब मंदिर सामने आया
तो मन ने कहा, "मेरी हर पुकार सुन ली थी।"
बर्फीले शिवलिंग के सामने खड़ा मैं,
थकान, भय, अहंकार – सब पिघल गए।
बस रह गया एक शांत मन,
जो कह रहा था – "यही सच्चा सफ़र है।"
फिर लौटा नीचे, मगर मन वहीं रह गया,
उन पहाड़ों की गोद, उस नीरव प्रार्थना में।
बद्री-केदार की वो यात्रा पथ नहीं थी,
वो तो विलय था अपनी ही भावना में।
अब जब भी शहर की भीड़ में शोर उठता है,

सुमित, लेखाकार

मैं आँखें मूँद लेता हूँ, सारा जग ठहर जाता है।
वो हिमालय, वो हवा, वो आरती की गूँज
हर सांस में आज भी शिव का असर छा जाता है।

यह यात्रा सिर्फ़ पर्वतों की नहीं थी,
ये तो आत्मा की ऊँचाई तक पहुँचने की राह थी।
जहाँ हर कदम पर थकान मिटती गई,
और हर श्वास में भक्ति समा गई।
"जो एक बार गया बद्री-केदार,
वो लौटकर भी वहीं रह गया।"

मैं एक अबोध बच्चा

राजकुमार, वरि. लेखाकार

मैं एक नासमझ अबोध बच्चा,
समझ रहा था दुनियादारी को सच्चा,
क्या चल रहा था, मेरे अपनों के बीच,
पर जो चल रहा था, मुझे लगता नहीं था अच्छा ||
मैं एक नासमझ अबोध बच्चा
सहमत खड़े थे वो दोनों, न्यायलय के कठघरे में,
क्योंकि बट गया था सब कुछ, उन दोनों के कहे में,
पर मैं समझ ना पाया, मैं क्यों बट गया था,
शायद इसलिए कि मैं था, दिमाग से कच्चा ||
मैं एक नासमझ अबोध बच्चा
मैं सोच रहा था, सजा किसको मिली है,
पर वो दोनों खुश थे, खुद के बंटवारे में,
ऑर्डर ऑर्डर की आवाजें, सुन वो दोनों फिर चुप थे,
अब क्या बँटना बाकी था, सोच रहा था मैं मन का सच्चा ||
मैं एक नासमझ अबोध बच्चा
मां ने मेरे हाथ को पकड़ा, मैंने पकड़ा पापा का हाथ,
न जाने मम्मी ने क्यों, झट से झटका पापा का हाथ,
जज की सुन माँ खुश थी, पर पापा की आंखें थी नम,
फिर मुझको एहसास हुआ, दोनों का विश्वास था कच्चा ||
मैं एक नासमझ अबोध बच्चा,
काश उन नासमझ दोनों को, कोई मेरे बारे में समझाता,
मेरी खुशियों के बारे में, उन दोनों को बतलाता,
मैं कभी बटने न देता, अपने घर की चार दीवारों को,
अगर मैं न होता, नासमझ अबोध बच्चा, दिमाग से कच्चा ||
मैं एक नासमझ अबोध बच्चा ||

मेरी क्या गलती
(गिलहरी की कलम से)

विक्रम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मैं तो पेड़ पर रहती हूँ
गर्मी की दोपहरी की कड़ी धूप सहती हूँ
सर्दी की ठंड में भी बाहर ही रहती हूँ
ईश्वर ने मुझे ऐसा ही बनाया
इसमें मेरी क्या गलती
मैं तो एक पेड़ से दूसरे पेड़ जा रही थी
रास्ते में सड़क जो अडी पड़ी थी
सडक जो बहुत गर्म थी
मैंने जैसे ही पेड़ से छलांग लगाई
तुरंत एक कार वहां आई
मैंने दौड़ भी लगाई
परन्तु कार मेरी तरफ सरपट भागी आई
मैं बच-बचाकर भागी
लेकिन मैं तो रही अभागी
क्योंकि दूसरी कार भी आ रही थी भागी-भागी
सड़क पर थी इतनी भीड़
मैं तो बना रही थी अपना नीड़
नीड़ बनाने की थी इतनी जल्दी
कहीं हो न जायेकोई गलती
मुझे तो हो रही थी बहुत ही जल्दी
इस लिए तो मैं जा रही थी भागी-भागी
ऊपर पेड़ की डाल पर बैठी, बिटिया मेरी निहार रही थी,
अपनी बेबस माँ को शायद, वह मन ही मन पुकार रही थी।

मेरी पहली हवाई यात्रा

बचपन से केवल एक सपना,
मै कैसे उड़ूँ हवा में,
कैसे पहुँचू बादलों पर,
रुई के जैसे बादलों पर,
महल होगा कोई,
कोई राक्षस रहता होगा,
जो पकड़ता होगा बच्चों को,
खा लेता होगा उन्हें,
ये अजीबो-गरीब सोच में,
हो गया कब बड़ा,
मालूम नहीं वो सपना,
कब छुट गया,
कहाँ टूट गया,
फिर एक दिन ऐसा आया,
मौका लाया एक यात्रा का,
जाना था जल्दी,
मंजिल थी दूर कही,
अपना सामान साथ ले,
विमान पत्तन पर पहुँच गया,
टिकट कराया था ऑन-लाइन से,
दो घन्टे पूर्व पहुँचना था,
हिदायत थी उसमें ऐसी,
विमान पत्तन भी था,
सपने के महल जैसा,
सोचा कही छिपा होगा राक्षस भी,
कहाँ खाता होगा लोगों को.
हलकी सी मुस्कराहट थी,
अपनी इस बचकानी सोच की,
सुरक्षा थी कुछ बहुत बड़ी,
लाइनों से गुजरते हुए,
जाँच हुई हमारी पूरी,
अपने सामने ही पाया,
एक सहायता कर्मचारी को,
सवाल हमारे अनेकों,
किस दिशा में,
किसके पास जाना हमें,
ऐसे सवाल पर,
एक तरफ ऊँगली करके,
लम्बी मुस्कराहट फेंकी हम पर,
समझ गया वो,
हम है पहली हवाई यात्रा वाले,
उत्साह और आँखों में चमक भरी है,
कंप्यूटर के पीछे कोई सुंदर सी परी है,
सब से मीठा बोल रही है,
टिकट लेकर पहचान पूछ रही है,
बदले में यात्रा अनुमति-पत्र देकर,
सामान दूसरे काउंटर से,
एक्स-रे मशीन में भिजवा रही है,
कह कर हम को ये बातें,
मिले गाये सामान,
अब हम को मंजिल पर,
प्रतीक्षा करे जब तक,
फ्लाइट के उद्घोष हो तब-तक,
सोचा हमने थोडा घूमे इधर- उधर,
शॉपे देखी अलग-अलग,
जो थी सामानों से भरी,
जल-पान, पेय, स्नैक्स की,
नक्काशी और गिफ्ट शॉप की,
मूल्यों ने फाइव स्टार दिखाया,
महलों जैसा सम्मान पाया,
कुछ ही पलो में फ्लाइट का उद्घोष हुआ,
एक तरफ से फिर लाइन लगाई,
सुरक्षा मशीन से फिर गुजरें हम,
यात्रा अनुमति-पत्र की जाँच कराई,
एक बड़े दरवाजे से हम यूँ बाहर निकले,
सामने कई बसों को लाइनों में पाया,
लाइनों में बढ़ने लगे हम,
बस में फिर चढ़ने लगे हम,
दूर हमने एक राक्षस पाया,
विशाल पेट, बड़े पहिये थे उसके,
सुंदर और विशाल बड़ा था,
बस ने हमें उसके पास पहुँचाया,
बचपन के राक्षस को उस रूप में पाया,
पेट में सब उसके समा रहा था,
कई गाडियों से घिरा हुआ था,
बढ़ती सीढियाँ हमें चढ़ा रही थी,
सपना कोई पूरा करा रही थी,
विमान के प्रवेश पर,
व्योम-बाला ने हमारा सत्कार किया,
यात्रा अनुमति-पत्र से सीट देखकर,
हमें यूँ निर्देश दिए,
अपनी सीट पर आप बैठ जाए,
सीट पर बैठते ही,
सुरक्षा का पाठ पढ़ाया,
पायलट के निर्देश से,
अब उड़ने का समय आया,
सीट की पेटी सभी बांध लें,
मोबाइल एरोप्लेन-मोड़ पर डाल लें,
उडान होगी अब शुरू,
वायुयान के इंजन ने अपनी आवाज बढाई,
जोर- जोर से हिलने लगा यूँ,
डर के मारे दिल घबराया,
कुछ बच्चों की किलकारी निकली,
सीट को पकड़ा हमने यूँ,
अचानक उसने यूँ दौड़ लगाई,
देखते-सोचते जमीन कब छुट गई,
हिलना भी अब बंद हुआ,
विमान प्रचारिका ने सीट की पेटी खुलवाई,
एक घंटा चालीस मिनट में,
पहुँचेगा ये विमान,
संगीत सुने या सो जाए,
ऐसा निर्देश हमें सुनाया,
घूम रही थी विमान प्रचारिका भी,
परी जैसे दिख रही थी,
टॉफी, पानी बाँट रही थी,
नाश्ता लेकर, कॉफ़ी लेकर,
सब से पूछ रही थी,
नाश्ता खाकर, कॉफ़ी पीकर,
हमनें थोडा सा आराम पाया,
सपना सा सब था जैसे,
इसमें अब विराम लगाया,
वायुयान के झटकों ने फिर,
हमको यूँ झिंझोड दिया,
डर लगा फिर जैसे,
अभी समय पूरा हुआ कैसे,
प्रभु को याद किया,
सब पापों की माफ़ी माँगी,
भूल हुई, माफ़ी देना,
दिल ऐसा घबराया,
विमान प्रचारिका ने पायलट का,
सन्देश हमें जब सुनाया,
मौसम ख़राब है, घबराये मत,
जल्दी ही अवतरण होगा हमारा विमान,

पंकज अरोडा, लेखाकार

सीट की पेटी पुनः बंधवाई,
बाहर के दृश्य देखकर,
कोतुहलता हमारी जागी,
खिड़की से बादल देखें,
खिड़की से पहाड़ देखें,
नीचे सब-कुछ छोटा था,
जैसे कोई बच्चों का खिलौना था,
छोटी गाड़ी पतली सड़क पर,
छोटे मकान, छोटी इमारतें,
छोटे जंगळ, छोटे तालाब थे,
ढूँढने लगा विमान भी,
अब अपनी मंजिल को,
फिर से उसने दौड़ लगाई,
जैसे खुली सड़क उसको बहुत बहाई,
उतरते ही विदाई का समय आया,
सीट खोलकर इंतजार कराया,
पायलट निकलकर बाहर आया,
व्योम-बाला ने यात्रा समाप्ति का सन्देश सुनाया,
सकुशल यात्रा की अनुभव करवाया,
पुनः बस से फिर,
विमान-पत्तन का रुख करवाया,
अपना सामान लेकर हम भी,
बहिर्गमन द्वार को बढ़ने लगे हम,
रास्ता अपना ढूंढने लगे हम,
बचपन का अपना सपना,
ऐसे हमने पूरा पाया,
अपनी पहली हवाई यात्रा का,
हमने यूँ आनंद उठाया,
पूरी हुई हमारी हवाई यात्रा,
रोचक और अविस्मरणीय,
ऐसा अनुभव हमने पाया |

चंडीगढ़ — एक ख्वाबों का शहर

नरेंद्र कुमार, लेखाकार

चंडीगढ़ तू शहर नहीं,
जैसे धरती पर उतरा स्वर्ग कहीं।
हरी-भरी तेरी हर एक राह,
पेड़ों की छाँव में बसती चाह।

सीधी-सादी चौड़ी सड़कें,
जैसे जीवन की साफ लकीरें।
न शोर-शराबा, न भागमभाग,
सुकून यहाँ हर पल की तकदीरें।
गुलमोहर, अमलतास की छाया,
हर सेक्टर में फूलों की माया।
साफ हवा और निर्मल पानी,
तेरी फिज़ा लगे है सुहानी।

अस्पतालों में सेवा सच्ची,
हर सुविधा यहाँ है अच्छी।
बिजली-पानी की न कमी,
आराम भरी हर शाम यहीं।
खुशनुमा लोग, मीठी बोली,
दिल में बसती सादगी भोली।
मुस्कान लिए हर एक चेहरा,
अपनापन देता है गहरा।

ओ चंडीगढ़, तू गर्व हमारा,
शहर नहीं, है सपना प्यारा।
जो भी आया तेरी गोद में,
बस गया दिल के हर मोड़ में।

हाउस-वाइफ - एक अनदेखा स्तंभ

नरेन्द्र सिंह चारण,
स.ले.अ.

हर गृहिणी का नींव के पत्थर सा वजूद है,
दिखता नहीं कहीं, पर हर दीवार में मौजूद है।
वह धूप में छाँव है, और ठंड में अलाव है,
मगर किसी की नज़रों में, बस एक हाउस-वाइफ है।
वह सुबह सबकी नींद से पहले जग जाती है,
सारे घर की थकान को, चाय की प्याली से मिटाती है।
वह रात को सबसे बाद में सोती है,
पर उसकी मेहनत की कभी कोई तनख़्वाह
नहीं होती है।
वह न हो तो त्यौहार, त्यौहार नहीं लगता है,
वह न हो तो रसोई में रोटी नही बनती है,
न होतो घर में सामान नहीं मिलता है,
वह न हो तो घर में घर जैसी बात होती नहीं है,
वह न हो तो घर बस एक मकान सा लगता है।
कुछ लोग कहते हैं– ÷वह
करती क्या है दिन भर"
पर कोई उनसे पूछे–
"क्या ज़िंदा रहता उसके बिना ये घर"।
आज तालियाँ बजती हैं,
केवल कामकाजी नारी के नाम,
पर उस स्त्री का क्या,
जिसने घर को ही बनाया अपनी पहचान।
कुछ लोगो की नज़र में वह नौकरी नहीं करती,
पर वो नौकरी से कम भी तो नहीं करती,
बच्चों के भविष्य की वो नींव रखती है,
फिर भी वह गुमनाम बनकर रहती है।
बच्चों की पहली वर्णमाला भी वही है,
उनकी पहली सुबह भी वही है,
पति की हर फ़िक्र का हल भी वही है,
और घर की हर मुश्किल का हल भी वही है।
यह विरोध नहीं चारण का,
बस एक प्रश्न है समाज से,
गृहिणी कोई विकल्प नहीं,
वह तो एक आधार है समाज का ,
नारी सशक्त है, यह बात सच है,
पर शक्ति सिर्फ़ दफ़्तर में नहीं,
रसोई और आँगन में भी बसती है।
सम्मान दो उसे,जो चुपचाप सब संभाल जाती है,
हर परिवार की सफलता के पीछे,
एक गृहिणी मुस्कुराती है।
उसे सम्मान दो, उसे प्यार दो, उसे अपना भी एक
आसमान दो,
वह घर की रीढ़ है, उसे बस थोड़ा सा यह अहसास दो।
हर गृहिणी का नींव के पत्थर सा वजूद है,
दिखता नहीं कहीं, पर हर दीवार में मौजूद है।

निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति के मूल - भारतेंदु हरिश्चंद्र

जिंदगी का सफर

चांद सिंह दहिया, स.ले.अ.

जिंदगी के सफर ने,
हमें अकेले जीना,
अकेले ही खुश रहना सिखा दिया।
बदल जाता है जब कोई अपना,
हमें भी बदलना सिखा दिया
समेट कर अपने दिल के टुकड़े,
खुद ही सम्भलना सिखा दिया।
कितना भी बना रहे दर्द जिंदगी में,
हमें मुस्कुराना सिखा दिया।
हम बहुत हँसते थे,
जिंदगी ने आज रोना सिखा दिया।
सबके साथ बैठना अच्छा लगता था,
आज अकेले रहना सिखा दिया।
बातें करने का शौक बहुत था हमें,
जिंदगी ने आज चुप रहना सिखा दिया।
बच्चे फेशबुक और व्हाटसप में खो गए,
जिंदगी ने हमें बेगाना बना दिया
छूट गए जो सफर में,
वो मेरे अजीज थे हम कुछ नहीं थे उनके,
पर वो मेरे दिल के करीब थे।
जिंदगी सफर में खुद से रूबरू करती रही मुझे,
है सफर ही जिंदगी, ये बताती रही मुझे।

वृक्ष लगाएँ

योगेश 'नवीन'

धरती माँ का श्रृंगार है,
पर्यावरण के लिए अवतार है,
बिना पेड़ों के भैया मेरे-सूना सूना ये संसार है।
घर में बच्चे दो या एक,
घर के बाहर पेड़ अनेक,
पीकर विष अमृत देते है पेड़ कितने अच्छे होते हैं।
घर-दफ्तर या सड़क किनारे,
बाग-बगीचे,
गांव-खेत में अनगिन पेड़ लगाकर,
सीचें सोना उपजाएँ रेत में।
सदियों से देव समझते रहे,
पूजा पेड़ों की करते रहे,
वृक्ष लगाएँ और बढ़ाएँ हम ऐसे पुण्य करते रहें।

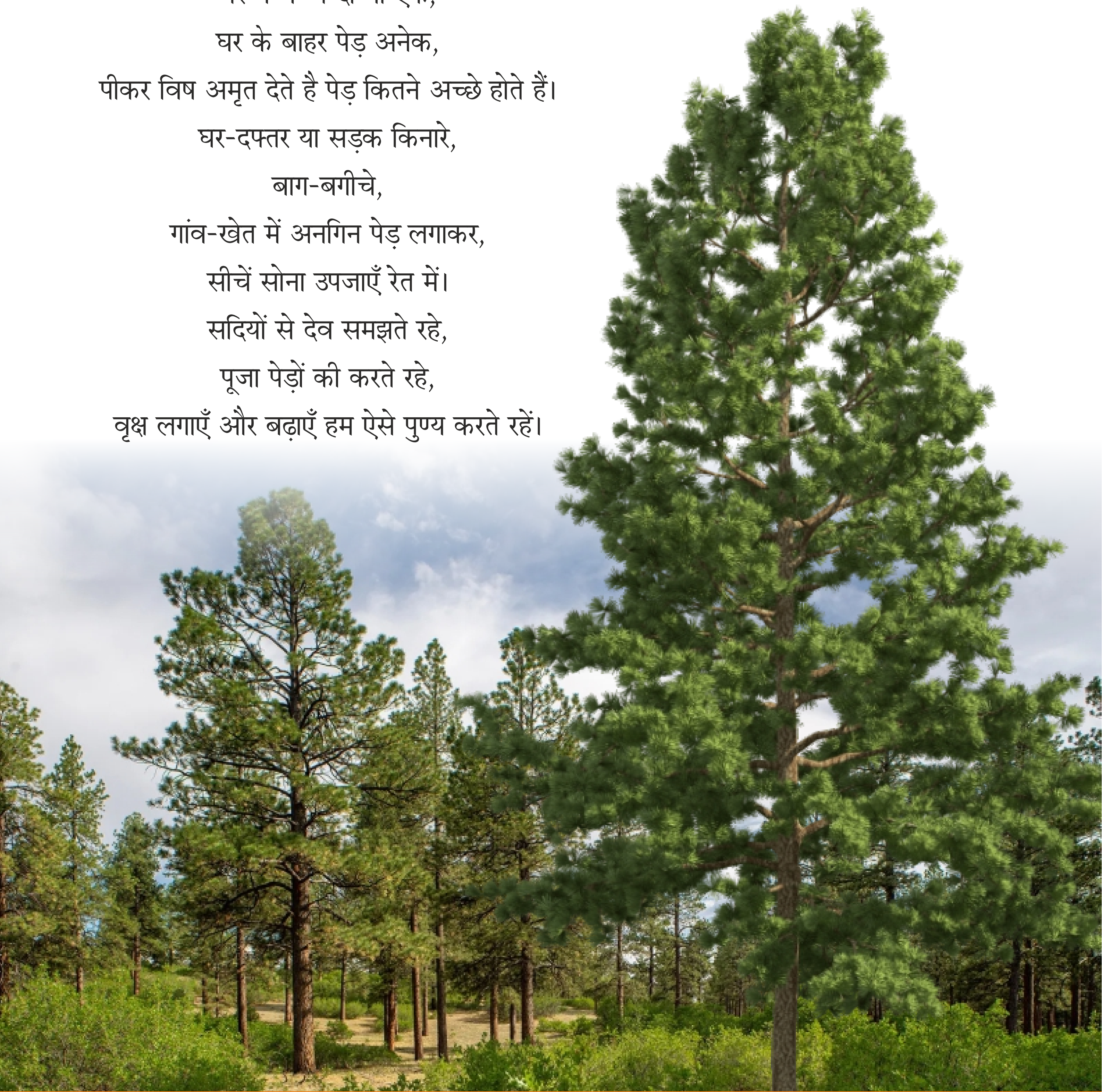

आशा रुपी पंछी

सचिन सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक

आशा रूपी पंछी भी पंख फैलाए।
आत्मा रूपी पेड़ में यह अपना घर बसाए।
बिना शब्द के अपने गीत सुनाए।
रुके न कभी अपना सुर यह लगाता जाए।
विपदा में इसका राग और भी मधुर हो जाए।
प्रचंड तूफान भी इस छोटे से पंछी का गाना रोक न पाए।
मुरझाये चेहरे इसकी लय से फिर से खिल जाएँ।
हिमभूमि में भी इसका गीत गूंजता जाए।
अनलिखित सागर की लहरों को भी चीरता जाए।
घोर विपत्ति होने पर भी यह मन में ज्योत जलाए।
पाए न खुद कुछ भी बस देता जाए देता जाए।

खेलों का महत्त्व

कहते हैं कि जिंदगी अपनी रफ़्तार से चलती है, लेकिन अगर इसे सच में मज़ेदार, सक्रिय और यादगार बनाना हो तो खेलों का साथ ज़रूरी है। बचपन में कभी आपने ध्यान दिया होगा कि खेलने के नाम पर बच्चे कैसे उछल पड़ते हैं? चाहे गर्मी की दोपहर हो या सर्दी की ठिठुरन, बस एक गेंद दिख जाए और सब की सारी थकान गायब। खेलों में ऐसी ही एक जादुई ताकत है–जो थके हुए मन को तरोताज़ा कर देती है, उदास चेहरे पर मुस्कान ला देती है और शरीर में नई ऊर्जा का संचार कर देती है।

खेलों का असली मज़ा तो तभी आता है जब हम किसी मैदान में उतरकर देख लेते हैं। उस समय ना पढ़ाई का तनाव याद आता है, ना ऑफिस का प्रेशर, ना घर की टेंशन–बस हम होते हैं, हमारी टीम होती है और सामने वो खेल जिसे जीतना होता है या बस मन से खेलना होता है। यह सच है कि खेल हमें सिर्फ खुश नहीं करते, बल्कि ज़िंदगी की कई गहरी बातें भी बहुत सरल तरीके से सिखा देते हैं। मैदान पर गिरकर उठना, हारकर भी मुस्कुराना और जीतकर आगे बढ़ जाना–ये सबक किताबों में भले लिखे हों, लेकिन असली एहसास खेलों में ही होता है।

आजकल की जिंदगी इतनी तेज़ हो गई है कि लोगों के पास खुद के लिए भी वक्त नहीं बचता। मोबाइल, लैपटॉप और काम ने हमें कहीं न कहीं मशीन जैसा बना दिया है। ऐसे में खेल वह विराम हैं जिसकी हर किसी को जरूरत है। खेल शरीर को सक्रिय रखते हैं, दिल को मज़बूत रखते हैं और दिमाग को शांत रखते हैं। यदि कोई रोज सिर्फ आधा घंटा भी खेल ले, तो उसका शरीर खुद-ब-खुद हल्का महसूस करता है, दिमाग साफ होता है और रात की नींद भी शानदार आती है। खेलों का यह असर किसी दवा से कम नहीं।

किताबों में पढ़ाई ज़रूरी है, यह बात सौ प्रतिशत ठीक है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि खेलने वाले बच्चे पढ़ाई में भी ज़्यादा तेज़ होते हैं? खेल उनकी याददाश्त मजबूत कर देते हैं, दिमाग़ को फ्रेश कर देते हैं और उनमें अनुशासन भी बढ़ता है। मैदान में हर सेकंड एक फैसला लेना होता है–कब दौड़ना है, कब रुकना है, कब गेंद पास करनी है–ये सभी चीजें दिमाग को फुर्तीला बनाती हैं। इसलिए कहा जाता है कि खेल सिर्फ शरीर नहीं, दिमाग को भी चुस्त रखते हैं।

टीमवर्क की असली भावना भी खेल ही सिखाते हैं। जिंदगी में हम सब एक समाज का हिस्सा हैं और हमें एक-दूसरे की जरूरत पड़ती है। खेलों में टीम का हर सदस्य महत्वपूर्ण होता है। चाहे क्रिकेट हो, फुटबॉल, कबड्डी या कोई और खेल–टीम के बिना जीत संभव नहीं। यही बात जिंदगी में भी काम आती है। परिवार में, दफ्तर में, दोस्तों के बीच–हम हर जगह टीम का हिस्सा होते हैं। खेल हमें सिखाते हैं कि किस तरह मिलकर काम किया जाता है, किस तरह मुश्किल समय में साथी का साथ नहीं छोड़ना चाहिए और किस तरह एक-दूसरे की ताकत का उपयोग करना चाहिए।

खेल हमारे अंदर आत्मविश्वास भी भरते हैं। जब कोई खिलाड़ी बड़ी भीड़ के सामने प्रदर्शन करता है तो उसे अपने अंदर एक अलग ही साहस महसूस होता है। मैदान की यह हिम्मत बाद में जिंदगी के हर क्षेत्र में काम आती है। जो लोग खेलते हैं वे अक्सर बेझिझक बोल पाते हैं, अपनी राय रख पाते हैं और निडर होकर आगे बढ़ते हैं। खेलों में मिलने वाले छोटे-छोटे अनुभव बड़ी-बड़ी हिम्मत में बदल जाते हैं।

आज के समय में खेल सिर्फ मज़ा या फिटनेस का तरीका नहीं रहे। ये अब बड़े करियर बन चुके हैं। क्रिकेटर, फुटबॉलर, एथलीट, कोच, फिटनेस ट्रेनर, कमेंटेटर, स्पोर्ट्स एनालिस्ट–ऐसे कितने ही पेशे हैं जिनमें लोग नाम भी कमा रहे हैं, पैसा भी और सम्मान भी। पहले लोग खेलों को शौक की चीज़ समझते थे, लेकिन अब खेल नौकरी से कहीं ज़्यादा अवसर दे रहे हैं। इसलिए खेलों को कभी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

अमनदीप सिंह, लेखाकार

सबसे अच्छी बात यह है कि खेल समाज को जोड़ते हैं। जब भारत का कोई खिलाड़ी दुनिया में चमकता है, तो पूरा देश एक साथ खुश होता है। खेल किसी व्यक्ति की भाषा, धर्म, जाति नहीं देखते–सिर्फ उसकी मेहनत और प्रतिभा देखते हैं। मैदान में सब बराबर होते हैं। यही वजह है कि खेल समाज में एकता बढ़ाते हैं और लोगों के बीच प्रेम की भावना पैदा करते हैं। देशभक्ति की भावना भी खेलों से बहुत गहरी होती है–जब देश का तिरंगा ऊपर उठता है तो हर भारतीय का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है।

अगर बात मज़ेदार पक्ष की करें तो खेलों में मनोरंजन भरपूर होता है। चाहे गली क्रिकेट हो या स्कूल का फुटबॉल मैच, कभी कोई फिसल जाता है, कभी गेंद पड़ोसी के घर चली जाती है, कभी कोई जानबूझकर आउट नहीं मानता–यानी खेल हंसी-ठिठोली से भरपूर होते हैं। यह मस्ती ही खेलों की असली जान है। खिलाड़ियों में एक अलग ही दोस्ती होती है–कभी लड़ाई, कभी नाराज़गी, फिर चाय पर सबका एक होना। मैदान की ये यादें हमेशा दिल में रहती हैं।

खेल इंसान को खुद से भी जोड़ते हैं। जब हम दौड़ते हैं, कूदते हैं, पसीना बहाते हैं, तो हमें लगता है कि हम ज़िंदा हैं, सक्रिय हैं, ऊर्जा से भरे हुए हैं। खेल हमें हमारे शरीर की क्षमता का एहसास कराते हैं, और बताते हैं कि हम उससे कहीं ज़्यादा कर सकते हैं जितना हम सोचते हैं।

आज की दुनिया में जहां तनाव हर उम्र के लोगों को परेशान कर रहा है, खेल एक ऐसी थेरेपी हैं जो बिना पैसे के मिलती है और जिसका असर तुरंत होता है। चाहे सुबह की दौड़ हो या शाम का बैडमिंटन मैच, चाहे गली क्रिकेट हो या बच्चों की कबड्डी–हर खेल हमें थोड़ा हल्का, थोड़ा खुश और थोड़ा बेहतर बना देता है।

खेल हमें सिखाते हैं कि जीत और हार तो जीवन का हिस्सा हैं। कोई हमेशा जीत नहीं सकता और कोई हमेशा हारता भी नहीं। जो आज हारता है, वही कल जीतता है–बस कोशिश जारी रहनी चाहिए। यही सीख हमें मुश्किल समय में भी आगे बढ़ने की ताकत देती है।

आखिर में यही कहा जा सकता है कि खेल सिर्फ खेल नहीं हैं, बल्कि ये हमारी जिंदगी का वह हिस्सा हैं जो हमें स्वस्थ, खुश, अनुशासित, आत्मविश्वासी और सकारात्मक बनाते हैं। खेल दोस्त भी देते हैं, सीख भी देते हैं, यादें भी और खुशी भी। इसलिए अगर कोई कहता है कि खेलने से समय खराब होता है, तो उसे जरूर कहना चाहिए कि खेलने से समय नहीं, जिंदगी संवरती है।

तो आइए, आज से यह छोटा सा संकल्प लें कि हर दिन कम से कम आधा घंटा खेलेंगे–अपनी सेहत के लिए, अपनी खुशी के लिए, और अपनी जिंदगी को थोड़ा और सुंदर बनाने के लिए।

क्योंकि खेल सिर्फ शरीर की ज़रूरत नहीं, मन की खुशी भी हैं–और जीवन का उत्सव भी।

किताबें: हमारी सबसे सच्ची दोस्त

एक समय था जब किताबें हमारी ज़िंदगी का स्वाभाविक हिस्सा हुआ करती थीं। छुट्टी के दिन उपन्यास पढ़ना, सुबह अख़बार के साथ चाय पीना - ये सब आदतें नहीं, बल्कि जीवनशैली थीं। किताबें केवल शब्दों का संग्रह नहीं थीं, वे सोचने का तरीका सिखाती थीं, अकेलेपन में साथ देती थीं और मनोरंजन का एक महत्वपूर्ण साधन थीं।

लेकिन आज का सच यह है कि किताबें हमारे घरों में मौजूद होते हुए भी हमारी दिनचर्या से बाहर होती जा रही हैं। सवाल यह नहीं है कि लोग पढ़ नहीं सकते, सवाल यह है कि लोग पढ़ना क्यों नहीं चाहते?

• मोबाइल फोन के प्रभुत्व में आधुनिक जीवन:

आज की दुनिया मोबाइल फोनपर सिमट गई है। मोबाइल फोन केवल हमारी हथेली में नहीं बल्कि हमारी चेतना में बस चुका है। सुबह आँख खुलने से लेकर रात को सोते समय तक विभिन्न तरह की सूचनाओं एवं संदेशों का प्राप्त होना एवं उनका प्रेषण करना,रात को सोने से पहले नींद की आखिरी नज़र भी मोबाइल स्क्रीन पर रखना हमारी आदत से ज्यादा मजबूरी बन गयी है ।

आँखों को बाँध लेने वाले लघु चलचित्र दृश्य और आभासी समाज ने हमारे दिमाग को तेज़ गति का आदी बना दिया है। ऐसे में किताबें, जो धीरे चलती हैं, ठहरकर सोचने को प्रेरित करती हैं, बोझिल लगने लगती हैं। किताब पढ़ते समय मन भटकता नहीं, बल्कि मन से सामना होता है,और शायद आज के दौर में यही सबसे मुश्किल काम है।

• समय की कमी नहीं, धैर्य की कमी:

“आजकल समय ही कहाँ है?” यह वाक्य सबसे ज़्यादा बोला जाता है। लेकिन अगर हम एक पल को रुके और सोचे तो पता चलेगा कि हम अपना कीमती समय रोज़ बर्बाद करते हैं- जैसे कि बिना मतलब मोबाइल फोन पर सोशल मीडिया देखते हुए,लघु छाया चित्रों का रोज़मर्रा के जीवन में परस्पर प्रभाव, बेकार की चीज़ें देखते हुए समय व्यतीत करना। आज के जीवनशैली में मोबाइल फोन पर समय बिताने की तुलना में किताबों के कागज़ पलटने जैसे अनुभव कही ज़्यादा उबाऊ लगती है। असल में समस्या समय की नहीं, धैर्य की है। किताब धैर्य माँगती है, और धैर्य आज की सबसे दुर्लभ चीज़ बन गई है।लगातार छोटे-छोटे वीडियो देखने से दिमाग को क्षणिक आनंद मिलने की आदत पड़ जाती है। इसका परिणाम यह होता है कि हमारा मस्तिष्क गहरी सोच, धैर्य और एकाग्रता की मांग करने वाले कामों से बचने लगता है। किताब पढ़ना, लंबे लेख समझना या किसी समस्या पर देर तक विचार करना हमें बोझिल लगने लगता है।जैसे नियमित व्यायाम से शरीर स्वस्थ रहता है, वैसे ही निरंतर अभ्यास से मस्तिष्क अधिक तेज़ और सुचारु रूप से कार्य करता है

• अल्पकालिक संतोष की मानसिकता:

आज की दुनिया “तात्कालिक” की दुनिया है - तात्कालिक मैसेज, तात्कालिक जानकारी, तात्कालिक मनोरंजन। किताबें इस संस्कृति के

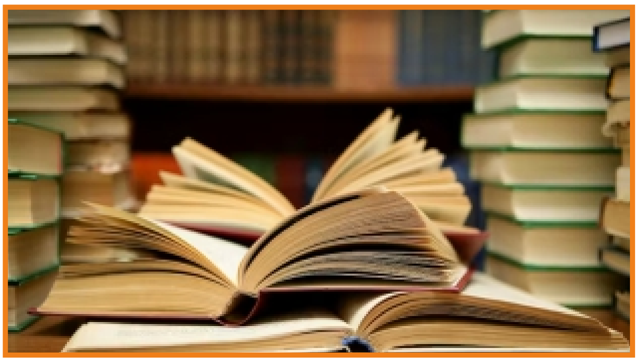

रितेश गुप्ता, लेखाकार

ठीक उलट हैं। वे धीरे असर करती हैं, सोच को गहराई देती हैं और नजरिया बदलती हैं।लेकिन हम परिणाम चाहते हैं, प्रक्रिया नहीं। यही वजह है कि लोग पूरी किताब पढ़ने की बजाय उसका सार, या समीक्षाका वीडियो देखकर संतुष्ट हो जाते हैं।आजकल आप पूरी किताब का वीडियो ऑडियो-विजुअल रूप में देख सकते हैं, जो पढ़ने की तुलना में कहीं अधिक रोमांचक और आकर्षक अनुभव देता है।

• परिवार और समाज में पढ़ने का माहौल कम होना:

पहले घरों में अख़बार नियमित आता था, अलमारी में किताबें सजी रहती थीं। बच्चे अपने माता-पिता को पढ़ते हुए देखते थे। आज वही बच्चे देखते हैं कि बड़े भी हर खाली पल में मोबाइल उठाते हैं। परिवार के सदस्य एक ही कमरे में होते हुए भी अपनी-अपनी स्क्रीन में व्यस्त रहते हैं। जब घर में पढ़ने का माहौल नहीं होगा, तो बच्चों में आदत कैसे बनेगी? पढ़ने की संस्कृति केवल स्कूल से नहीं, घर से बनती है। समाज स्तर पर भी पुस्तकालयों, वाचनालयों और साहित्यिक चर्चाओं की संख्या घट रही है। पढ़ना अब ज्ञान का साधन कम और परीक्षा पास करने की मजबूरी अधिक बन गया है। इस वजह से न सिर्फ़ सीखने की रुचि घटती है, बल्कि ज्ञान और संस्कारों की समझ भी कमजोर पड़ती है।

• जानकारी और ज्ञान के बीच भ्रम:

आज के समय में कई लोग यह सोचते हैं कि गूगल पर सब कुछ उपलब्ध है, तो उन्हें अलग से पढ़ने या सीखने की आवश्यकता ही नहीं है। लेकिन सिर्फ जानकारी मिलना और वास्तविक ज्ञान प्राप्त होना दोनों अलग-अलग हैं। गूगल या अन्य सर्च इंजन तुरंत तथ्य और जानकारी दे देते हैं, लेकिन इसे याद रखना या गहराई से समझ पाना कठिन होता है, और कई बार लोग इसे अपने ज्ञान जैसा मान बैठते हैं, जबकि वे सिर्फ जानकारी पढ़ रहे होते हैं। जब हम किताब पढ़ते हैं, तो हमें विषय के संदर्भ, कारण-परिणाम और गहरी समझ मिलती है, जिससे हम बेहतर निर्णय ले पाते हैं। इसके विपरीत, केवल सर्च इंजन पर निर्भर रहने से ज्ञान सतही रह जाता है और तर्क शील सोच कमजोर हो सकती है।

• भाषा से दूरी:

आज के समय में अंग्रेज़ी और हिंग्लिश के व्यापक प्रभाव के कारण मातृभाषा में पढ़ने और सोचने की आदत धीरे-धीरे कम होती जा रही है। जब हम अपनी मूल भाषा से दूर होते हैं, तो सिर्फ़ शब्दों का ज्ञान नहीं खोते, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों, भावनाओं और संवेदनाओं से भी दूरी बन जाती है, जिससे साहित्य और कला का आनंद भी फीका पड़ता है। भाषा केवल संचार का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी पहचान, सोच और अनुभवों का भंडारहै, जो हमें अपने अतीत और परंपराओं से जोड़े रखता है। मातृभाषा में पढ़ने और लिखने से व्यक्ति कीवैचारिक गहराई, रचनात्मकता और आत्मविश्वासभी बढ़ता है, जो केवल दूसरी भाषा के दुभाषिए के रूप में नहीं आ सकता। लेकिन आज बहुत से युवा अंग्रेज़ी को ही अधिक महत्वपूर्ण समझते हैं, जिससे हिंदी और अन्य

मातृभाषाओं का साहित्य, लोककथाएँ और लोकगीत भी धीरे-धीरे उपेक्षित हो रहे हैं। ऐसे में जरूरी है कि हम अपनी भाषा को पढ़ाई और दैनिक जीवन में प्राथमिकता दें, ताकि भाषा न सिर्फ़ जीवित रहे, बल्कि उसकी समृद्ध साहित्यिक धरोहर भी आने वाली पीढ़ियों तक सुरक्षित पहुँच सके।

♦ निष्कर्ष

• पढ़ने की आदत क्यों ज़रूरी है:

आज के तेज-तर्रार और डिजिटल युग में पढ़ने की आदत की अहमियत शायद कहीं खो सी गई है। लेकिन असल में पढ़ना हमारी सोच, समझ और व्यक्तित्व को आकार देने वाला एक अनमोल अभ्यास है। किताबें हमारे दिमाग को मजबूत बनाती हैं, ध्यान केंद्रित करने की क्षमता बढ़ाती हैं और नई-नई सीख को बढ़ावा देती है।

जब आप कोई पुस्तक या उपन्यास पढ़ते हैं, तो आप केवल शब्दों को नहीं पढ़ रहे होते,और न केवल जानकारी इकट्ठा कर रहे होते है, बल्कि लेखक के वर्षों कभी-कभी पूरे जीवन के अनुभवऔर निरंतर चिंतन से निकले विचारों से संवाद कर रहे होते हैं। एक पुस्तक लेखक की लंबी मेहनत, गहन अवलोकन और समय के साथ अर्जित समझ का सार होती है। किसी पुस्तक को हम एक सप्ताह या एक महीने में पढ़ सकते हैं, लेकिन उसके भीतर समाया ज्ञान, संवेदना और दृष्टि लेखक के कई वर्षों के अनुभव का परिणाम होता है। इस तरह, पढ़ना दरअसल सीमित समय में किसी लेखक के वर्षों के कार्य और जीवन-दृष्टि को समझने का अवसर देता है, जो हमारे सोचने के तरीके को समृद्ध और व्यापक बनाता है।

किताबों से हमारी भावनात्मक बुद्धिमत्ता बढ़ती है। पढ़ने से हमारी भाषा-शक्ति और कल्पना की दुनिया भी विस्तृत होती है, जो रोज़मर्रा की समस्याओं को नए नजरिये से देखने में मदद करती है। यही वजह है कि पढ़ने की आदत हमें बेहतर सोच और बेहतर जीवन की ओर अग्रसर करती है। नियमित पढ़ने से हमारी एकाग्रता, स्मरण शक्ति और तर्कपूर्ण सोच मजबूत होती है, जिससे हम जीवन के जटिल सवालों का सामना बेहतर ढंग से कर पाते हैं। किताबें हमारी कल्पना की दुनिया को विस्तृत करती हैं और हमें दूसरों के अनुभवों और संस्कृतियों से परिचित कराती हैं, जो कहीं और नहीं मिलता। पढ़ने से सिर्फ शिक्षा ही नहीं मिलती, बल्कि आत्मिक संतुलन, मानसिक शांति और भावनात्मक बुद्धिमत्ता भी गहरी होती है।

• हम भारतीय और हमारा समृद्ध हिंदी साहित्य:

हम भारतीय बेहद सौभाग्यशाली हैं कि हमारी हिंदी साहित्य परंपरा अत्यंत समृद्ध है। मुंशी प्रेमचंद ने गांव, किसान, स्त्री और समाज की सच्चाइयों को सरल भाषा में अमर बना दिया। धर्मवीर भारती ने आधुनिक संवेदना और आत्ममंथन को साहित्य में स्थान दिया। जयशंकर प्रसाद ने काव्य, नाटक और दर्शन को भारतीय संस्कृति की आत्मा से जोड़ा।इसके अलावा महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', फणीश्वरनाथ रेणु, हरिशंकर परसाई, भीष्म साहनी जैसे अनेक लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ मनोरंजन भी देती हैं, ज्ञान भी बढ़ाती हैं और हमें अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ती हैं।

फोन की घंटी

यह कहानी एक लड़की की है। जब भी पापा का फोन आता है, तब मन में अजीब-सी खुशी की लहर दौड़ जाती है। यह कहानी उस लड़की की है, जिसके माता-पिता अब इस दुनिया में नहीं रहे। इस कहानी में लड़की के परिवार के बारे में विस्तार से बताया गया है।

पहले उसका परिवार एक हँसता-खेलता परिवार था। उस लड़की के परिवार में वह तीन भाई-बहन थे, जिसमें वह सबसे बड़ी थी और उसके दो भाई थे। उसके माता-पिता एक खुशहाल परिवार थे। सब की शादी हो गई थी। सभी भाई-बहन अपने-अपने गृहस्थ जीवन में खुशी से जीने लगे।

लड़की अपने ससुराल चली गई। ससुराल में पति और सास-ससुर से भी नौकरी को लेकर बातें चलती रहती थीं। लड़की के मायके में उसके पिता की सरकारी नौकरी थी। जब रिटायर होने के बाद उनका सरकारी मकान खाली करना पड़ा, उसके बाद उन्होंने एक बना-बनाया मकान खरीदा। वहाँ पर शिफ्ट हो गए।

उस जगह जाने के बाद माँ अक्सर बीमार रहने लगीं और अचानक साल-भर के बाद माँ का देहांत हो गया। उस लड़की का जीवन माँ के बिना अधूरा-सा हो गया। उसका जीवन अंधकार से भर गया।

जो होती थी तो लड़की फोन पर अपना दु:ख-सुख बता पाती, लेकिन अब किसको फोन करे? जब कभी वह लड़की फोन की घंटी देखती, तो पड़ती कि अब माँ का फोन कभी नहीं आएगा। रोज़ जैसे सुबह-शाम माँ का फोन आता– “बेटी कैसी है?”, “ससुराल में सब ठीक है ना?” –आज लड़ाई तो नहीं हुई? वह हर समय के लिए अपनी माँ के पास आ जाती थी।

यह सब बातें अब कोई नहीं पूछेगा। बेटी जैसी ममता पहले माँ ही ससुराल में थी। अब जब माँ ही नहीं रही, कौन फोन करेगा? यह सोच-सोचकर बेटी हमेशा रोती रहती। लेकिन चलो, माँ नहीं रही, बाप तो जिंदा है।

यह बात उसके पापा ने उसको पानी पिलाकर समझाई– “बेटी फिक्र मत कर, मैं हूँ ना। तेरा बाप मैं हूँ, फोन करेगा।” यह सुनकर बेटी को तसल्ली हुई। इस बीच माँ नहीं रही, पापा तो हैं।

वो दोनों फोन करके हाल-चाल लेते रहते, जैसे समय पहले होता रहा। लड़की के पापा उसका हाल-चाल पूछते, उसे ससुराल में हाल-चाल पूछते, लड़की को आर्थिक सहायता भी देते। लड़की को माँ की कमी तो कोई पूरी नहीं कर सकता, लेकिन आधा बाप ही तो उसकी कमी को कुछ कम कर सकता है।

समय बीतता रहा और अचानक लड़की के पिता बीमार हो गए। वे बहुत कमजोर हो गए। उनकी किडनी खराब हो चुकी थी। डॉक्टर ने जवाब दे दिया था कि उनके पिता कभी भी यह दुनिया छोड़ कर जा सकते हैं।

जब यह बात लड़की ने सुनी तो वह घबरा गई। अब वह रोज़ अपने पिता को फोन करती– “पिता जी कैसे हो, आप ठीक हो जाओ, फिक्र मत करो।” यह हमेशा बोलती रहती। इस तरह एक हफ्ते तक चलता रहा।

उसके पिता जी भी फोन करके अपना हाल-चाल देते। अचानक एक दिन लड़की के पिता का फोन नहीं आया। सुबह से शाम हो गई, कोई फोन नहीं आया। अचानक फोन बजा–फोन की घंटी की आवाज़ सुनकर वह भागी। फोन उठाने के लिए जैसे ही फोन उठाया, उसके भाई का फोन आया– “पिता जी अब इस दुनिया में नहीं रहे।”

लोकेश, हाउसकीपिंग

यह सुनते ही लड़की बेहोश हो गई। जब उसको होश आया, वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी– “अब मम्मी-पापा दोनों मुझे छोड़ कर चले गए। अब कौन मुझे फोन पर पूछेगा? कौन मुझे फोन पर डाँटेगा?”

लड़की यह सब बोलकर खूब रोने लगी। अब कभी मम्मी-पापा का फोन नहीं आएगा। किसके होते हुए जहाँ तक माँ-बाप जिंदा हों, भाई-बहन पूछते हैं; उनके जाने के बाद कोई नहीं पूछता।

लड़की का जीवन उसके माँ-बाप से ही था। उनके बिना कोई मायका नहीं। अब लड़की को किसी का फोन नहीं आता। अब वह अंदर-ही-अंदर घुटती रहती है, क्योंकि अब कोई नहीं रहा।

इस कहानी में लड़की के माता-पिता तो नहीं रहे, जिनकी कमी कोई पूरी नहीं कर सकता। लेकिन उनकी जगह पर उसका पति और उसके दो बच्चे हैं, जिन्हें देखकर उसे अपना जीवन जीना है।

उसका पति बहुत अच्छा था। वह कभी माँ-बाप की कमी पूरी नहीं कर सकता, पर वह एक अच्छा पति और सच्ची जिम्मेदारी निभा रहा था। लड़की को अब उसका पति सहारा देता, ताकि उसको माँ-बाप की याद न आए। लड़की को अपने पति में माँ-बाप दिखाई देते थे, जो उसके हर सुख-दु:ख में उसका साथ निभाता।

पटरियों का शोर और एक पिता की खामोश जंग

विशाल कुमार गुप्त
लेखाकार

नवंबर 2016 की वह सर्द शाम मुझे आज भी याद है। माँ के हाथों में मेरा जॉइनिंग लेटर था। उनकी आँखों में बेटे की नौकरी की खुशी तो थी, लेकिन माथे पर चिंता की लकीरें भी थीं। "बेटा, नौकरी तो सरकारी मिल गई... लेकिन असम? इतनी दूर?" मैंने तब लापरवाही से मुस्कुराते हुए कहा था, "माँ, दूरियाँ क्या होती हैं? आज के ज़माने में तो मोबाइल है, रोज़ बात करेंगे।"

तब मैं नादान था। मुझे क्या पता था कि असली दूरियाँ नेटवर्क की नहीं, वक्त की होती हैं—वो वक्त जो अपनों के साथ बीतता है, जो दोबारा लौटकर नहीं आता।

लोहे की लकीरें: 2016–2021 का संघर्ष

मेरी पहली पोस्टिंग असम के एक अनजान स्टेशन पर हुई।रेल की पटरियों की निगेहबानी करना काम था । तपती धूप में पसीना बहाना, मूसलाधार बारिश में भीगना और कड़कड़ाती ठंड की रातों में टॉर्च लेकर पटरियों की सुरक्षा करना।

हर दिन एक युद्ध जैसा था। अगर जीत गए, तो ट्रेनें सुरक्षित गुज़र जातीं; लेकिन मेरी अपनी ज़िंदगी कहीं पीछे छूट रही थी। गोरखपुर का मेरा घर अब एक सपने जैसा लगता था। जब भी छुट्टी की अर्ज़ी लगाता, मन में द्वंद्व चलता– "ड्यूटी करूँ या घर जाऊँ?"

एक रात, सुनसान पटरी पर निरीक्षण करते हुए मेरे जूनियर साथी ने पूछा, "सर, इतना कठिन काम... क्या आप कभी थकते नहीं?" मैंने हँसकर जवाब दिया, "भाई, थकान तो महीने की पहली तारीख को सैलरी देखकर उतर जाती है।" हम दोनों हँस पड़े, लेकिन वह हँसी खोखली थी। असम की वो खामोश रातें मेरे मन के शोर को दबा नहीं पा रही थीं। पटरियों की खट-खट के बीच एक ही सवाल गूँजता– "क्या यही मेरी पूरी ज़िंदगी है?"

एक सवाल जिसने नींद उड़ा दी

2021 आया और मेरी शादी हुई। पत्नी, पहली बार मेरे रेलवे क्वार्टर में आईं। सीलन भरी दीवारें, छोटा सा कमरा और बाहर हर वक़्त गुज़रती ट्रेनों का शोर। उन्होंने धीरे से पूछा, "क्या यही तुम्हारा घर है?"

मैंने जवाब दिया, "हाँ... ड्यूटी के बीच बस यही ठिकाना है।"

जाते वक़्त उनकी आँखों में नमी थी और होठों पर एक बात, "सुनो, कोई ऐसी नौकरी करो जहाँ तुम मुझे और हमारे आने वाले बच्चों को देख सको। मैं तुम्हें सिर्फ तस्वीरों वाला पति नहीं बनाना चाहती।"

वो शब्द मेरे दिल में किसी बीज की तरह गिर गए। अब यह नौकरी सिर्फ 'गुज़ारा' नहीं, बल्कि 'परिवार के भविष्य' का सवाल बन गई थी।

टॉर्च की रोशनी में जगी उम्मीद

फैसला हो चुका था–मुझे यह जीवन बदलना था। लेकिन ड्यूटी की भयंकर थकान के बाद पढ़ाई? यह पागलपन लगता था। फिर भी, मैंने शुरुआत की। रात के 1 बजे, ट्रैक के किनारे बैठकर, उसी टॉर्च की रोशनी में किताबें खोलीं जो पटरियाँ चेक करने के काम आती थी।

साथियों ने मज़ाक उड़ाया, "अरे सर, यहाँ भी पढ़ाई? कहीं ट्रेन आ गई तो?"

मैंने मुस्कुराकर कहा, "दोस्त, जिंदगी की ट्रेन तो आ ही रही है, मुझे बस अपनी पटरी बदलनी है।ज्ज

हर पन्ना पलटना एक जंग थी। नींद आँखों को बोझिल करती, शरीर टूटता, लेकिन मन में पत्नी की वो बात गूँजती– "तुम्हें हमारे लिए समय निकालना होगा।" असफलताएँ मिलीं, मॉक टेस्ट में नंबर कम आए, लेकिन मैंने हार नहीं मानी। मैंने सीख लिया था कि किस्मत के दरवाज़े खटखटाने से नहीं, उन्हें तोड़ने से खुलते हैं।

नन्ही मुट्ठी में बंद मेरी दुनिया: 2023 का चमत्कार

साल 2023 आया और मेरी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई। घर में नन्ही परी, मेरी बेटी का आगमन हुआ। जब मैंने उसे पहली बार गोद में लिया, उसकी कोमल उंगलियों ने मेरी उंगली थामी, तो लगा जैसे वक्त थम गया हो। पत्नी ने कहा, "अब तो घर आ जाओ। बेटी को पिता चाहिए, वीडियो कॉल नहीं।"

घर से वापस ड्यूटी पर लौटा, तो एक दिन पत्नी का फोन आया, "आज उसने पहली बार मुस्कुराना सीखा... काश तुम यहाँ होते।"

वो बात सीने में तीर की तरह चुभी। मैंने कसम खाई–अब और नहीं। क्या मैं चंद रुपयों के लिए अपनी बेटी का बचपन खो दूँ?

बेटी की वो अदृश्य पुकार मेरी सबसे बड़ी प्रेरणा बन गई। कहा जाता है कि बेटियाँ किस्मत लेकर आती हैं, शायद यह सच है। उसी दिसंबर, मेरी मेहनत रंग लाई। नई नौकरी का पत्र आया–चंडीगढ़ से। नया शहर, इज़्ज़तदार पद और सबसे बड़ी बात–घर से नज़दीकी।

नई सुबह: सफलता का असली स्वाद

पहली बार मैं अपनी पत्नी को क्वार्टर नहीं, एक 'घर' दिखाने लाया। ऑफिस की कुर्सी पर बैठकर जब शाम को घर लौटने की सोचता हूँ, तो सुकून मिलता है। पुराने साथी पूछते हैं, "रेलवे की कठिन नौकरी छोड़कर कैसा लग रहा है?"

मैं गर्व से कहता हूँ, "मैंने पटरियाँ छोड़ी हैं, जिम्मेदारी नहीं। पहले मैं लोहे की पटरियों की देखभाल करता था, अब अपने परिवार की खुशियों की।"

आज जब मैं शाम की चाय अपने परिवार के साथ पीता हूँ, तो मुझे वो स्टेशन की धूल और रातों का वो संघर्ष याद आता है। आज भी पटरियों के पास खुले आसमान के नीचे बैठना याद तो आता है, पर सच कहूँ तो वहाँ की धूल, शोर और बेचैनी में कभी सुकून नहीं था। फिर भी हम वहीं बैठे रहे, क्योंकि नौकरी करनी थी।

जीवन की सीख

इस सफर ने मुझे जिंदगी के सबसे बड़े सबक दिए:

* परिस्थितियाँ नहीं, संकल्प बदलो: मौके टॉर्च की रोशनी में खुद ढूँढने पड़ते हैं, वो चलकर नहीं आते।
* परिवार ही असली दौलत है: वीकेंड पर मिलने के लिए नहीं, बल्कि हर शाम साथ बिताने के लिए कमाओ।
* संघर्ष में ही शक्ति है: जब लगने लगे कि अब नहीं होगा, तभी जीत सबसे करीब होती है।
* एक वजह ढूँढो: मेरी वजह मेरी बेटी थी। जब आपके पास 'क्यों' होता है, तो 'कैसे' अपने आप मिल जाता है।

अगर आप भी आज किसी मुश्किल दौर में खड़े हैं, तो याद रखिए–अपनी 'टॉर्च' जलाए रखिए। आपकी भी ट्रेन आ रही है, बस हिम्मत मत हारना।

दिल्ली से चंडीगढ़

बच्चों को सिर्फ माँ मार सकती है बाप नही, क्योंकि वो बच्चों के लिए कोमल और क्रूर दोनो होती है। जबकि पति के लिए सिर्फ क्रूर होती है -

उपरोक्त विषय के अंतर्गत कोमल और क्रूर के बारे में जानने के लिए नीचे पढ़े -

एक 3 साल की कोमल से बच्ची को उसकी मां ने इतना तेज तमाचा मारा की उसके गाल पे उसके उंगलियों के निशान पड़ गए। इतने में उसके पति आएं तो बच्ची को अपनी गोंद में लिए लिए और उसे प्यार करके चुप कराने लगे। लेकिन बच्ची है की चुप ही नही हो रही थी।

अब उस बच्ची का गुस्सा पति परमेश्वर पर देवी स्वरूपा पत्नी जी ने कैसा निकाला गुस्से से लाल पीला होकर पत्नी जी बोली इस आदमी के साथ इसीलिए कही जाने का मन नहीं करता है। और उस आदमी की सिर्फ इतनी सी गलती थी की महाभारत का युद्धस्थल कुरुक्षेत्र में बस रुकते ही बस के पीछे बीड़ी पीने चले गया। इसी दौरान मां ने गुस्से में और थोड़ा प्यार दुलार से उस बच्ची को बोलती है की अब चुप हो जा नही तो दूसरी गाल पे भी तमाचा जड़ दूंगी। थोड़ी सी बच्ची चुप हुई और मां के गोंद में सो गई। बेचारा पति परमेश्वर इस दौरान बिलकुल मौन धारण किए हुए था। थोड़ा सा माहौल शांत हुआ था की इतने देर में ही एक हरियाणवी काका ने मोर्चा संभालते हुए बोले की के बात हो गईं. छोरे, इत्ते घने बात न होए की तने तो चूपी सांध ली। ये जो तने आज चूपी सांधी है न तो समझ ले अगला नंबर तेरी ही होए। तो बच्ची की मां ने काका पे गुस्सा होने लगी और बोली की काका आप बीच में ना ही बोलो तो अच्छा है। -

बेचारा पति परमेश्वर अभी भी चुप है...

प्रमोद कुमार गुप्ता
वरि. लेखाकार

लेकिन हरियाणवी काका इधर मोर्चा संभाले हुए है और बोले की देख भाई तने साथ रहना है, इसे प्यार से राख या लात मार के राख मने की लेना। इतने में अब बेचारा पति परमेश्वर अपनी चिर निद्रा को तोड़ते हुए काका पर बरस पड़ा अरे काका चुप रहो, पिछले 10 साल से उतना सर तो मेरी पत्नी ने नही खाई जितना आपने मेरा सर सिर्फ 10 मिनट में खा गए... अब मामला धीरे धीरे त्रिकोणीय होने लगा था, जैसे लगा की अंबाला पहुंचते पहुंचते मार पीट शुरू हो जाएगी, लेकिन मारपीट है की शुरू हो ही नही रही थी, एक कोई गुस्सा होता तो दूसरा शांत हो जाता।

अब आगे क्या ही लिखूं ...?

अंत में मुझे मोर्चा संभालना पड़ा... तीनो पक्षों को अलग अलग खूब अच्छे से समझाया तब जाकर मारपीट शुरू हुई।

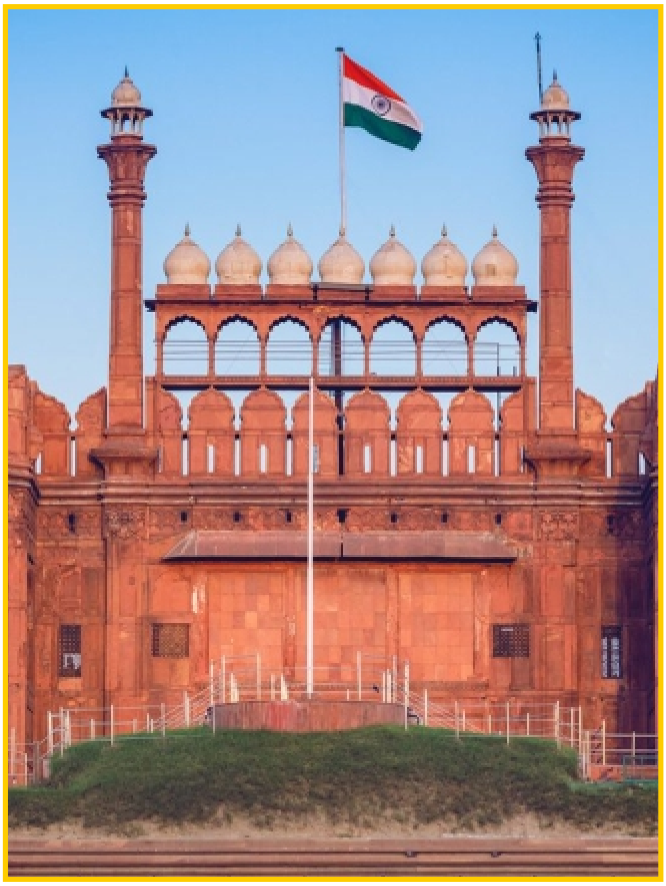

गर्मी के दिन

एक आम आदमी की गर्मी की कहानी सुबह के ठंडे पानी की चाहत से शुरू होती है। पर विडंबना देखिए, छत पर रखी पानी की टंकी में भरा हुआ पानी दोपहर तक ऐसे उबल जाता है कि नल खोलते ही लगता है जैसे गीजर से सीधे खौलता हुआ पानी आ रहा हो। अब आदमी नहाए तो कैसे? नहाने से आधा घंटा पहले बाल्टी भरकर रखनी पड़ती है ताकि पानी थोड़ा 'सामान्य' तापमान पर आए। सुबह-सुबह ऑफिस या काम पर जाने की तैयारी करते वक्त ही पसीना गर्दन से होते हुए पीठ तक बहने लगता है। वह जो डियोड्रेंट या पाउडर हम बड़े चाव से लगाते हैं, वह बस घर की चौखट पार करते ही पसीने के सैलाब में बह जाता है।

जब हम अपनी मोटरसाइकिल या स्कूटर निकालते हैं, तो उसकी सीट किसी जलते हुए तंदूर से कम नहीं लगती। उस पर बैठने से पहले कई बार चिंतन करना पड़ता है। फिर शुरू होता है ट्रैफिक का सफर। लाल बत्ती पर खड़े होकर जब बगल वाली बड़ी गाड़ी के बंद शीशों और उसमें चल रहे एसी को देखते हैं, तो एक पल के लिए अपनी किस्मत पर थोड़ा सा अफ़सोस होता है। पर फिर गमछा याद आता है–एक आम आदमी का सबसे बड़ा हथियार। सिर पर लपेटा हुआ वह गीला गमछा ही हमारी असली राहत है। धूल, धुआं और ऊपर से बरसती आग, ऐसा लगता है जैसे कुदरत हमारी सहनशक्ति की परीक्षा ले रही हो।

दोपहर के एक-दो बजते ही सड़कों पर वह सन्नाटा पसर जाता है जो किसी कर्फ्यू जैसा लगता है। लू की वो गरम लपटें जब चेहरे पर पड़ती हैं, तो लगता है कि किसी ने सीधे भट्ठी का दरवाजा खोल दिया हो। ऑफिस में अगर कूलर लगा है, तो उसकी आवाज़ जेट इंजन जैसी होती है, पर हवा? हवा वही घुटन भरी। हम बस इसी ताक में रहते हैं कि कब कोई 'ठंडी चीज़' पिला दे। यहाँ 'ठंडी चीज' मतलब सड़क किनारे मिलने वाला गन्ने का रस, जिसमें बर्फ की डली थोड़ी ज्यादा हो, या फिर वह शिकंजी वाला जो पुदीने और नींबू की खुशबू से हमें एक पल के लिए स्वर्ग का एहसास करा देता है।

सचिन सिंह,
कनिष्ठ अनुवादक

गर्मी के दिनों में एक आम आदमी को अगर गर्मी से अधिक कोई सताता है , तो वह है 'बिजली का बिल'। रात को सोते समय जब मन करता है कि एसी या कूलर को फुल पर चला लें, तभी दिमाग में अगले महीने आने वाला बिजली का भारी-भरकम बिल दिमाग में और गर्मी बढा जाता है। फिर हम क्या करते हैं? हम कूलर के सामने एक गीली चादर टांग देते हैं, या बार-बार उठकर उसमें पानी भरते हैं। आधी रात को जब अचानक बिजली गुल होती है, तो लगता है जैसे किसी ने जान निकाल ली हो। फिर सारा परिवार छत पर या बालकनी में इस उम्मीद में टहलता है कि शायद कहीं पेड़ों के पत्ते सरसराहट करें और थोड़ी सी हवा चल जाए। वह हाथ वाला पंखा जिसे हम साल भर भूल जाते हैं, अचानक घर का सबसे जरूरी सदस्य बन जाता है।

घर की महिलाओं के लिए तो गर्मी किसी सजा से कम नहीं होती। छोटे से किचन में, जहाँ पंखा चलाने से गैस बुझ जाती है, वहाँ रोटियां बनाना किसी तपस्या जैसा है। पसीने से तर-बतर होकर जब माँ या पत्नी थाली लेकर आती है, तो उस खाने में सिर्फ स्वाद नहीं, उनकी मेहनत की तपन भी होती है।

दोपहर में दाल-चावल खाने के बाद जो सुस्ती चढ़ती है, उसे एक आम आदमी 'लंच ब्रेक' नहीं, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी विलासिता मानता है।

पर ऐसा भी नहीं है कि गर्मी सिर्फ दुख लेकर आती है। गर्मी का मतलब कच्चे और मीठे पके हुए आम भी तो है। वह रविवार की दोपहर, जब पूरा परिवार बैठकर आम चूसता है या आम का रस निकलकर पीता है या आम से नमक के पराठे, तब सारी तपिश भूल जाते हैं। बच्चों के लिए गर्मी का मतलब स्कूल की छुट्टियाँ हैं। भले ही दोपहर में बाहर जाने की मनाही हो, पर वह छुप-छुपकर बर्फ के गोले खाना, क्रिकेट खेलना और शाम को पड़ोस के बच्चों के साथ कूलर के आगे बैठना—यह सब खुशियाँ केवल इसी मौसम की देन हैं।

गर्मी की बात चले और मटके के पानी का जिक्र न हो फ्रिज की बोतल चाहे कितनी भी ठंडी हो जाए, पर जो सुकून मटके के उस पानी में मिलता है, वह किसी भी फाइव स्टार होटल के पानी में नहीं मिल सकता। उस मिट्टी की खुशबू हमें जमीन से जोड़े रखती है।

शाम होते ही जब धूप की तेजी थोड़ी कम होती है, तो मोहल्ले की सड़कों पर रौनक लौट आती है। लोग छतों पर पानी छिड़कते हैं। उस वक्त जो गीली मिट्टी की खुशबू आती है, वह किसी महंगे सेंट को मात दे देती है। हम बस आसमान की तरफ टकटकी लगाकर देखते हैं कि कहीं कोई काला बादल दिख जाए। हर उड़ती हुई धूल को हम आंधी समझ लेते हैं और हर ठंडी हवा को बारिश का संकेत।

हम आम आदमी इस गर्मी से बचपन से लड़ते-लड़ते ही बड़े हुए हैं। यह मौसम हमें सिखाता है कि सूर्य देव कितने ही गर्म हो जाए और धुप कितनी भी तेज हो, काम पर तो जाना ही है। यह हमें संयम रखना सिखाता है। हमे सीखते चुके हैं कि ये तपती दोपहरें हमेशा नहीं रहेंगी। एक दिन बादल छाएंगे, बिजली कड़केगी और पहली बारिश हमारी सारी थकान और पसीने को धो देगी। तब तक, हम बस अपने गमछे, मटके के पानी और आम के सहारे इस जंग को मुस्कुराकर लड़ते रहेंगे।

आखिरकार, हम आम आदमी हैं, हमें तो हर मौसम में अपनी राह बनानी आती है। गर्मी तो बस एक माध्यम है यह याद दिलाने का कि घर की ठंडी छाँव की कीमत क्या होती है।

संघर्ष से सफलता तक: एक आम व्यक्ति की यात्रा

किसी भी समाज की वास्तविक प्रगति केवल असाधारण व्यक्तियों के प्रयासों से नहीं होती, बल्कि उन असंख्य सामान्य व्यक्तियों के निरंतर और शांत श्रम से होती है, जिनका योगदान प्रायः अदृश्य रह जाता है। यही सामान्य व्यक्ति समाज की रीढ़ होता है—जो न विशेष सुविधाओं से सुसज्जित होता है, न ही असाधारण अवसरों से, फिर भी अपने दायित्वों का निर्वहन पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से करता है।

यह लेख ऐसे ही एक आम व्यक्ति की यात्रा का प्रतीकात्मक वर्णन है, जिसमें संघर्ष और सफलता को किसी चमत्कारी घटना के रूप में नहीं, बल्कि जीवन की स्वाभाविक प्रक्रिया के रूप में देखा गया है।

आम व्यक्ति और उसकी पहचान:

"आम" शब्द को प्रायः सामान्यता या साधारणता से जोड़कर देखा जाता है, जबकि वास्तविकता यह है कि आम व्यक्ति ही किसी भी व्यवस्था को चलाने वाला मुख्य स्तंभ होता है। कार्यालयों, संस्थानों और समाज के विभिन्न स्तरों पर कार्यरत यह व्यक्ति बिना किसी विशेष पहचान के अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है।

उसकी चुनौती यह नहीं होती कि वह क्या बन सकता है, बल्कि यह होती है कि वह भीड़ में खो न जाए। जब अपेक्षाएँ सीमित होती हैं, तो आत्मविश्वास भी धीरे-धीरे सीमित होने लगता है। यही स्थिति संघर्ष का प्रारंभिक बिंदु बनती है।

संघर्ष का स्वरूप:

संघर्ष सदैव आर्थिक अभाव या संसाधनों की कमी तक सीमित नहीं होता। कई बार यह मानसिक, भावनात्मक और व्यावसायिक स्तर पर भी होता है। रोज़मर्रा की एकरूपता, सीमित अवसर, और स्वयं की क्षमताओं के पूर्ण उपयोग न हो पाने की भावना—ये सभी संघर्ष के रूप हैं।

आम व्यक्ति का संघर्ष इसलिए अधिक जटिल होता है क्योंकि वह प्रायः मौन रहता है। वह परिस्थितियों से टकराने के बजाय उनके साथ सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करता है।

सफलता की सामाजिक अवधारणा:

समाज ने सफलता की कुछ निश्चित परिभाषाएँ निर्धारित कर दी हैं—उच्च पद, अधिक वेतन, सामाजिक प्रतिष्ठा। प्रारंभिक चरण में अधिकांश व्यक्ति इन्हीं मानकों के आधार पर अपने लक्ष्य निर्धारित करते हैं।

किन्तु समय के साथ यह स्पष्ट होता है कि ये मानक सभी के लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं होते। जब सफलता केवल बाहरी मानकों पर आधारित होती है, तो संतोष क्षणिक बनकर रह जाता है।

आत्म-संदेह और धैर्य:

संघर्ष की प्रक्रिया में आत्म-संदेह एक स्वाभाविक तत्व है। प्रत्येक असफल प्रयास व्यक्ति को यह सोचने पर विवश करता है कि क्या वह सही दिशा में अग्रसर है। इस स्थिति में धैर्य और निरंतरता का महत्व अत्यधिक बढ़ जाता है।

आम व्यक्ति की विशेषता यह होती है कि वह बार-बार असफल होने के बावजूद अपने दायित्वों से विमुख नहीं होता। वह अनुभव से सीखता है और अपनी गति से आगे बढ़ता है।

धीमी प्रगति का महत्व:

आधुनिक समय में त्वरित सफलता को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। किंतु यह सत्य है कि स्थायी प्रगति प्रायः धीरे-धीरे ही होती है। आम व्यक्ति के पास जोखिम उठाने की सीमित क्षमता होती है, इसलिए उसकी यात्रा अधिक संतुलित और सावधानीपूर्ण होती है।

धीमी गति का अर्थ पिछड़ना नहीं, बल्कि स्थायित्व की ओर बढ़ना होता है।

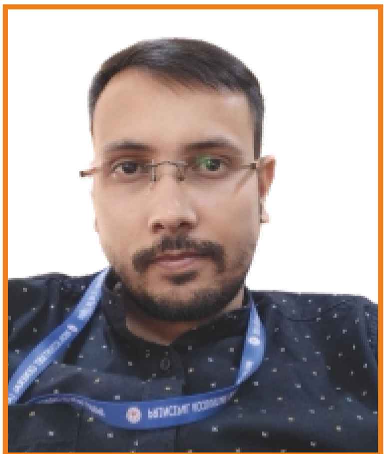

अंकित कुमार ठाकुर
लेखाकार

असफलता का सकारात्मक पक्ष:

असफलता को प्रायः नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है, जबकि यह अनुभव और परिपक्वता का महत्वपूर्ण स्रोत होती है। प्रत्येक असफलता यह स्पष्ट करती है कि किन मार्गों से बचना चाहिए और किनमें सुधार की आवश्यकता है।

आम व्यक्ति के लिए असफलता रुकावट नहीं, बल्कि मार्गदर्शन का कार्य करती है।

सामाजिक दबाव और आत्मनिर्णय:

संघर्ष के दौरान सामाजिक दबाव एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। परिवार, सहकर्मी और समाज अक्सर व्यावहारिक दृष्टिकोण अपनाने की सलाह देते हैं। यह सलाह कई बार उचित भी होती है, किंतु आत्मनिर्णय की क्षमता व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

यही वह चरण होता है जहाँ व्यक्ति अपने मूल्यों और प्राथमिकताओं को स्पष्ट करता है।

सफलता का वास्तविक स्वरूप:

आम व्यक्ति की सफलता प्रायः आंतरिक होती है। यह संतोष, आत्मविश्वास और स्थिरता के रूप में प्रकट होती है। इसमें न तो कोई बड़ा प्रदर्शन होता है और न ही बाहरी शोर।

यह सफलता व्यक्ति को अपने वर्तमान से सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता प्रदान करती है।

निरंतर यात्रा:

यह समझना आवश्यक है कि सफलता संघर्ष का अंत नहीं है। परिस्थितियाँ बदलती हैं, दायित्व बढ़ते हैं और नई चुनौतियाँ सामने आती हैं। किंतु अनुभव और आत्मविश्वास के साथ इनका सामना करना अपेक्षाकृत सरल हो जाता है।

संघर्ष और सफलता जीवन-यात्रा के दो स्वाभाविक चरण हैं, जो एक-दूसरे से पृथक नहीं हैं।

नैनीताल से 'सिटी ब्यूटीफुल' तक: मेरा सफर

जीवन भी एक सफर है, जहाँ हम अक्सर अपनी जड़ें एक जगह छोड़कर सुनहरे भविष्य की तलाश में दूसरी जगह कदम रखते हैं। मेरा यह सफर शुरू हुआ नैनीताल की उन धुंधली वादियों और ठंडी हवाओं के बीच से, जहाँ की ताल (झील) और पहाड़ों ने मुझे सुकून की परिभाषा सिखाई। लेकिन आज, मेरी कर्मभूमि चंडीगढ़ है, जिसे दुनिया 'सिटी ब्यूटीफुल' के नाम से जानती है।

नैनीताल में बिताया हर लम्हा एक कविता जैसा था। वहां सुबह की शुरुआत कोहरे की चादर और माल रोड पर चहल-पहल से होती थी। उन घुमावदार रास्तों और देवदार के पेड़ों के बीच जो सादगी थी, उसने मुझे धैर्य सिखाया। पहाड़ की चढ़ाई ने सिखाया कि लक्ष्य तक पहुँचने के लिए निरंतर चलते रहना जरूरी है। आज भी जब मैं यहाँ काम से थक जाता हूँ, तो बंद आँखों में नैनी झील का नीला पानी और नैना देवी मंदिर की घंटियों की गूँज सुनाई देती है।

जब मैं नैनीताल से निकलकर नौकरी के लिए चंडीगढ़ पहुँचा, तो यहाँ की सड़कों के जाल और अनुशासन ने मुझे चकित कर दिया। ली कार्बूज़िए द्वारा डिजाइन किया गया यह शहर आधुनिकता और प्रकृति का एक अनूठा संतुलन है। यहाँ के चौड़े सेक्टर, हर मोड़ पर बने गोलचक्कर और सड़कों के किनारे लगे घने पेड़ एक अलग ही अनुशासन का अहसास कराते हैं। पहाड़ की टेढ़ी-मेढ़ी गलियों से निकलकर इन सीधी और साफ सड़कों पर चलना एक नया अनुभव था। मुझे डर था कि शहर की भीड़ में मैं प्रकृति को खो दूँगा, लेकिन सुखना लेक और रॉक गार्डन ने उस कमी को पूरा कर दिया। शाम को सुखना लेक के किनारे बैठना मुझे बिल्कुल नैनीताल के किनारे बैठने जैसा अहसास कराता है।

किशन जोशी, एम टी एस

यहाँ रहते हुए मुझे महसूस हुआ कि चंडीगढ़ सिर्फ एक शहर नहीं, बल्कि अवसरों का केंद्र है। यहाँ की 'वर्क कल्चर' और लोगों की गर्मजोशी ने मुझे बहुत जल्द अपना बना लिया। जॉब की व्यस्तताओं के बीच, चंडीगढ़ की हरियाली मुझे घर (नैनीताल) की याद दिलाती है, जिससे मेरा तालमेल बना रहता है।

नैनीताल मेरी जड़ें हैं, तो चंडीगढ़ मेरे पंख। नैनीताल ने मुझे संस्कार और शांति दी, तो चंडीगढ़ ने मुझे करियर और एक आधुनिक नजरिया दिया। आज मैं यहाँ अपनी जॉब और जिम्मेदारियों के साथ खुश हूँ, क्योंकि मैंने पाया है कि आप कहीं भी रहें, अगर आपके मन में यादों का पहाड़ और आँखों में सपनों का शहर हो, तो सफर हमेशा खूबसूरत होता है।

आपके पत्र

महोदय/महोदया

हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 44वें अंक की प्राप्ति के संबंध में।

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' के 44वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए धन्यवाद । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ खासकर श्री कुलदीप सैनी का यात्रा वर्णन "दिल्ली से मनाली शहरी कोलाहल से पहाड़ी शांति तक", श्री रमेश कुमार शर्मा का यात्रा वर्णन "एक रोचक यात्रा", श्री सचिन सिंह का लेख "मन क्या है?", श्री अमनदीप सिंह का लेख "आजकल की जिंदगी", श्री विशाल कुमार गुप्त का लेख डिजिटल धोखाधड़ी और डिजिटल गिरफ्तारी, श्री हनुमार प्रसाद की कविता "एक चुटकी सिंदूर की कीमत क्या जाने दुश्मन", श्री विशाल कुमार गुप्त की कविता "कोरोना काल", श्री राजकुमार की कविता "कार्यालय" और श्री विक्रम सिंह की कविता "भारत के वीर सपूत" आदि रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका 'नवकिरण' की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

रोहिणी के. आर.

कार्यालय महालेखाकार (ले व ह)

केरल

महोदय/महोदया

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 44 वें अंक का प्रेषण

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 44 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ सुंदर है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं, विशेषकर श्री रचित शर्मा, लिपिक की "वृंदावन धाम एक अद्भुत स्थल" एवं श्री विक्रम सिंह कनिष्ठ अनुवादक की "कुरुक्षेत्रः एक धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहर" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में अहम भूमिका का निवर्हन करती है। पत्रिका के संपादक एवं संपादक मंडल को पत्रिका के उज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।भवदीया,

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा

नई दिल्ली

महोदय/महोदया

हिंदी ई-पत्रिका "नवकिरण" के 44 वें अंक के संबंध में।

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "नवकिरण" की एक ई- प्रति दिनांक 14.10.25 को प्राप्त हुई। पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार। भेजी गई पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणा दायक हैं। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद ।

भवदीया,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केंद्रीय),

चंडीगढ़

महोदय/महोदया

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका नवकिरण के 44 वें अंक का प्रेषण।

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका 'नवकिरण' की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका के आवरण पृष्ठ के साथ समाहित छायाचित्र आकर्षक एवं विषयानुकुल है। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए है। आजकल का जीवन बड़ी जल्दी में है साहब, गाँव की गलियों से शहर की सडकों तक, दोस्ती के रंग, मेरे जज्बात, धरती का स्वर्ग, माँ की मूरत आदि रचनाएं उत्कृष्ट हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं।

आशा है पत्रिका की गुणवता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्वल भविष्य और आगामी अंक के लिए बहुत-बहुत शुभकामनायें।

भवदीय,

कृष्ण सिंह

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा),

हरियाणा

महोदय/महोदया

कार्यालयीन पत्रिका "नवकिरण" के 44वाँ अंक की समीक्षा संबंधी।

आपके कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 44वाँ अंक प्राप्त हुआ। सहर्ष धन्यवाद। इस अंक के आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा एवं अन्य कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र मनोरम एवं आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट, मनमोहक एवं रोचक है। निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएं विशेष उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

क्र.सं. - रचनाकार - रचनाएँ

1. डॉ. सुधा तिवारी - जंगली आईरिस, धरती का स्वर्ग
2. श्री विशाल कुमार गुप्त - कोरोना काल
3. श्री नीतीश कुमार - आओ आपको बिहार घुमाएँ
4. श्री हनुमान प्रसाद - एक चुटकी सिंदुर की कीमत क्या जाने दुश्मन
5. श्री कुलदीप सैनी - आठवां वेतन आयोग: जब उम्मीदें और उलझनें टकराई
6. श्री सचिन सिंह - मन क्या है?

सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)

मुंबई

महोदय/महोदया

हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 44 वें अंक के पावती के संबंध में।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई-पत्रिका "नवकिरण" का 44वा अंक प्राप्त हुआ, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत मनमोहक है तथा इसकी आंतरिक साज-सज्जा भी आकर्षक है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। डॉ. सुधा तिवारी की "धरती का स्वर्ग", श्री सचिन सिंह की "मन क्या है", श्री सुमित की "मोबाइल", श्री रचित शर्मा की " कविता " विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

पत्रिका में समाहित सभी लेख, कविता, कहानी, संस्मरण आदि ज्ञानवर्धक और रोचक हैं। सारांशतः राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में इस पत्रिका ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया है। पत्रिका भविष्य में भी अपने लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हो, ऐसी कामना है।

भवदीय,

मनीष कुमार महतो

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (खान)

पश्चिम बंगाल

महोदय/महोदया

हिन्दी गृह पत्रिका "नवकिरण" के 44वें अंक के संबंध में।

आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 07/10/2025 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका "नवकिरण" के 44वें अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिको में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट डॉ लाखाराम का "सोशल मीडिया के दौर में रिश्तों की दरकती दीवारें÷ अपनों से अपनों का टूटता भरोसा", श्री अंकित कुमार ठाकुर का ÷सोशल मीडिया "एवं श्री रितेश गुप्ता का" हमारे दैनिक जीवन में माइक्रोप्लास्टिकः एक अदृश्य खतरा अत्यंत सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक लेख हैं।

इसके अतिरिक्त श्री अमनदीप सिंह की "आजकल का जीवन बड़ी जल्दी में है", श्री पंकज अरोड़ा की "माँ की मूरत", एवं श्री सुमित की "दोस्ती के रंग" कविताएं रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय व्यय)

नई दिल्ली

महोदय/महोदया

राजभाषा हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 44 वें अंक की पावती का प्रेषण।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा हिंदी पत्रिका 'नवकिरण' के 44 वें अंक का ई-संस्करण प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा सुंदर एवं अत्यन्त आकर्षक है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं विशेष रूप से निम्न रचनाएं अभूतपूर्व है-

क्रम संख्या रचना - रचनाकार

1. मन क्या है? - श्री सचिन सिंह
2. माँ की मूरत - श्री पंकज अरोड़ा
3. मेरे जज्बात - श्री प्रमोद कुमार गुप्त
4. सोशल मीडिया - श्री अंकित कुमार ठाकुर

साथ हीं, अन्य सभी रचनाएं रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उत्तरोतर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

सुनील कुमार साव

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक़)

झारखण्ड

कार्यालय के उपयोग हेतु वाक्यांश अंग्रेजी-हिंदी

	English Sentence	हिन्दी वाक्य
1	[refer] Please refer to above letter.	[संदर्भ लें] कृपया उपरोक्त पत्र का संदर्भ लें।
2	[vacancy] The vacancy has already been filled.	[रिक्त] रिक्त पद पहले ही भरा जा चुका है।
3	[track] The file movement register may be seen to track the file.	[पता लगाना] फाइल का पता लगाने के लिए फाइल मूवमेंट रजिस्टर देखा जाए।
4	[leave] Most of the staff is on leave.	[छुट्टी] अधिकतर कर्मचारी छुट्टी पर हैं।
5	[favourable action] In this regard, a favourable action will be highly appreciated.	[सकारात्मक कार्रवाई] इस संबंध में, सकारात्मक कार्रवाई सराहनीय है।
6	[fail] The committee has failed to submit its report in time.	[विफल होना] समिति अपनी रिपोर्ट समय पर देने में विफल हुई है।
7	[update] Important judgment relevant to the department not being updated.	[अद्यतन करना] विभाग से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय को अद्यतन नहीं किया जा रहा है।
8	[efficiency] The training has increased the efficiency of the workers.	[दक्षता] प्रशिक्षण ने श्रमिकों की दक्षता को बढ़ाया दिया है।
9	[at the earliest possible] The report may kindly be sent at the earliest possible.	[यथाशीघ्र] कृपया रिपोर्ट यथाशीघ्र भिजवाएं।
10	[document] The document was duly signed by the officer.	[दस्तावेज] दस्तावेज पर अधिकारी द्वारा विधिवत हस्ताक्षर किए गए थे।
11	[assistant] The dealing assistant has prepared the note.	[सहायक] संबंधित सहायक ने नोट तैयार कर लिया है।
12	[day-to-day work] The Government employees should be vigilant in their day-to-day work.	[दैनिक कार्य] सरकारी कर्मचारियों को अपने दैनिक कार्यों में सतर्क रहना चाहिए।
13	[fix a date] We need to fix a date for the next meeting.	[तारीख तय करना] हमें अगली बैठक की तारीख तय करनी है।
14	[Data collection] Data collection may be completed in the given time-frame.	[डेटा संग्रह] डेटा संग्रह निर्धारित समय में पूरा किया जाए।
15	[data analysis] The first phase of data analysis has been completed.	[डेटा विश्लेषण] डेटा विश्लेषण का पहला चरण पूरा हो गया है।
16	[regularly] The daily reports are being sent regularly.	[नियमित रूप से] दैनिक रिपोर्ट नियमित रूप से भेजी जा रही है।
17	[contingency] There is a provision of contingencies in budget.	[आकस्मिकता] बजट में आकस्मिकताओं के लिए प्रावधान है।
18	[reply] In this connection the reply has been given earlier.	[उत्तर] इस संबंध में, उत्तर पहले ही दिया जा चुका है।
19	[confidential information] Disclosure of confidential information will be treated as a breach of trust.	[गोपनीय जानकारी] गोपनीय जानकारी का प्रकटन विश्वास भंग माना जाएगा।
20	[clerical error] The applicants suffered due to clerical errors.	[लिपिकीय त्रुटि] लिपिकीय त्रुटियों के कारण आवेदकों को भुगतना पड़ा।
21	[chronological] Arrange the entries in chronological order.	[तिथिक्रमानुसार] प्रविष्टियों को तिथिक्रमानुसार व्यवस्थित करें।
22	[request] Department of Official Language had requested all the Ministries.	[अनुरोध करना] राजभाषा विभाग ने सभी मंत्रालयों से अनुरोध किया था।
23	[Certified] Certified copy of the relevant documents is produced.	[प्रमाणित] संबंधित दस्तावेजों की प्रमाणित प्रति प्रस्तुत की गई है।
24	[tour] The tour programme has been cancelled.	[यात्रा] यात्रा कार्यक्रम रद्द कर दिया गया है।
25	[reference] Mention the back reference in this case.	[संदर्भ] इस मामले में पिछले संदर्भ का हवाला दें।
26	[assign] The remaining work was assigned to concerned staff.	[सौंपना] शेष कार्य संबंधित कर्मचारियों को सौंप दिया गया है।
27	[approval] The plan will be submitted to the committee for approval.	[स्वीकृति] योजना को स्वीकृति के लिए समिति के पास भेजा जाएगा।
28	[appropriate action] The letter is being sent to you for appropriate action.	[उचित कार्रवाई] उचित कार्रवाई के लिए आपको पत्र भेजा जा रहा है।
29	[awaited] An affirmative action is awaited at your end.	[प्रतीक्षित] आपकी ओर से सकारात्मक कार्रवाई प्रतीक्षित है।
30	[administrative decision] This is an administrative decision.	[प्रशासनिक निर्णय] यह एक प्रशासनिक निर्णय है।
31	[adjourned] The meeting has been adjourned for two hours by the chairman.	[स्थगित] अध्यक्ष ने बैठक को दो घंटे के लिए स्थगित कर दिया है।
32	[security arrangement] There was a lack of adequate security arrangement.	[सुरक्षा व्यवस्था] पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था का अभाव था।
33	[accurate] The data had been found accurate.	[सही] डेटा सही पाया गया था।
34	[accountable] The Govt. employees are accountable to their organizations.	[जवाबदेह] सरकारी कर्मचारी अपने संगठनों के प्रति जवाबदेह हैं।
35	[abstract statement] The abstract statement is enclosed.	[संक्षिप्त विवरण] संक्षिप्त विवरण संलग्न है।

36	[financial transactions] Due to non-maintenance of the records, correctness of the financial transactions could not be ascertained in audit.	[वित्तीय लेन-देन] अभिलेखों का रखरखाव न होने के कारण लेखापरीक्षा में वित्तीय लेन-देनों की यथार्थता सुनिश्चित नहीं की जा सकी।
37	[management process] Audit examined the records relating to decisions, management processes.	[प्रबंधन प्रक्रिया] लेखापरीक्षा ने निर्णयों, प्रबंधन प्रक्रियाओं से संबंधित अभिलेखों की जांच की।
38	[subsequent] The subsequent Audit had not yet been completed.	[आगामी] आगामी लेखापरीक्षा अभी तक पूरी नहीं हुई थी।
39	[In compliance with] In compliance with the requirement of Act, Company constituted Audit Committee	[के अनुपालन में] अधिनियम की अपेक्षा के अनुपालन में, कंपनी ने लेखापरीक्षा समिति का गठन किया था।
40	[fact] The reply is to be viewed against the fact .	[तथ्य] उत्तर को इस तथ्य के साथ देखा जाना चाहिए।
41	[Auditor] Auditors should use methods and practices of the highest possible quality in their audits.	[लेखापरीक्षक] लेखापरीक्षकों को अपनी लेखापरीक्षा में उच्चतम संभव गुणवत्ता की पद्धतियां और प्रथाओं का उपयोग करना चाहिए।
42	[confidentiality] Confidentiality of information to which they have acces, should be maintained.	[गोपनीयता] जिस जानकारी तक उनकी पहुंच है, उसकी गोपनीयता बनाए रखी जानी चाहिए।
43	[information] Auditors shoud make use of information brought forward by the audited entity and other parties.	[जानकारी] लेखापरीक्षकों को लेखापरीक्षित इकाई और अन्य पार्टियों द्वारा दी गई जानकारी का उपयोग करना चाहिए।
44	[impaired] The independence of auditors should not be impaired by personal or external interests.	[भंग] लेखापरीक्षकों की स्वतंत्रता व्यक्तिगत या बाहरी हितों द्वारा भंग नहीं होनी चाहिए।
45	[commence] Audit work was commenced by the Accredited Auditor.	[शुरू करना] लेखापरीक्षा का कार्य मान्यता प्राप्त लेखापरीक्षक द्वारा शुरू किया गया था।
46	[observation] Reply from the Ministry supports Audit observation .	[अभ्युक्ति] मंत्रालय से प्राप्त उत्तर लेखापरीक्षा अभ्युक्ति का समर्थन करता है।
47	[Deficiency] Deficiencies were noticed in the quality of data.	[गुणवत्ता में कमी] डेटा की गुणवत्ता में कमियां पाई गईं।
48	[verifiable data] This should be done with verifiable data.	[सत्यापन योग्य डेटा] यह सत्यापन योग्य डेटा के साथ किया जाना चाहिए।
49	[Board] The ministry conveyed the decision to the Board.	[बोर्ड] मंत्रालय ने बोर्ड को निर्णय से अवगत कराया।
50	[consultant] The Audit suggestions had been discussed with the consultant.	[सलाहकार] लेखापरीक्षा सुझावों पर सलाहकार के साथ चर्चा की गई थी।
51	[cooperation] Audit acknowledges the cooperation extended by the management.	[सहयोग] लेखापरीक्षा, प्रबंधन द्वारा दिए गए सहयोग का आभार व्यक्त करती है।
52	[Management] The report has been finalised after considering the replies of Management.	[प्रबंधन] प्रबंधन के उत्तरों पर विचार करने के बाद रिपोर्ट को अंतिम रूप दिया गया है।
53	[finalise] The report has been finalised after considering the replies of Management.	[अंतिम रूप देना] रिपोर्ट को प्रबंधन के उत्तरों पर विचार करने के बाद अंतिम रूप दिया गया है।
54	[audit finding] The units are requested to furnish replies to the audit findings.	[लेखापरीक्षा निष्कर्ष] इकाईयों से लेखापरीक्षा निष्कर्षों के उत्तर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया है।
55	[financial interest] This was against the financial interests of the company.	[वित्तीय हित] यह कंपनी के वित्तीय हितों के प्रतिकूल था।
56	[proposal] The scheme did not encourage the proposals.	[प्रस्ताव] योजना ने प्रस्तावों को प्रोत्साहित नहीं किया।
57	[realistic data] There was no realistic data of the export.	[वास्तविक डेटा] निर्यात का कोई वास्तविक डेटा नहीं था।
58	[Norms] Government had not fixed any Norms.	[मानदंड] सरकार ने कोई मानदंड तय नहीं किया था।
59	[period] Matters relating to this period have also been included.	[अवधि] इस अवधि से संबंधित मामलों को भी शामिल किया गया है।
60	[adopted principles] The criteria was fixed on the basis of the adopted principles.	[अपनाए गए सिद्धांत] मानदंड अपनाए गए सिद्धांतों के आधार पर तय किए गए थे।
61	[responsibility] Necessary responsibility should be fixed.	[उत्तरदायित्व] आवश्यक उत्तरदायित्व तय किया जाए।
62	[lapse] Further, reasons for the lapse be examined.	[चूक] इसके अलावा, चूक के कारणों की जांच भी की जाए।
63	[fact] The reply confirms this fact.	[तथ्य] उत्तर इस तथ्य की पुष्टि करता है।
64	[record] Test-check of the records revealed.	[अभिलेख] अभिलेखों की नमूना जांच से पता चला।
65	[suo-moto] Non-submission of suo-moto Action Taken Notes.	[स्व-प्रेरणा से] स्व-प्रेरणा से की गई कार्रवाई टिप्पणियों को प्रस्तुत न करना।
66	[Follow up] Follow up on Audit Reports.	[अनुवर्ती कार्रवाई] लेखापरीक्षा प्रतिवेदनों पर अनुवर्ती कार्रवाई।
67	[Revenue] Analysis of Arrears of Revenue.	[राजस्व] बकाया राजस्व का विश्लेषण।
68	[blocking of funds] Unfruitful expenditure and blocking of funds.	[निधियों का अवरोधन] निष्फल व्यय और निधियों का अवरोधन।
69	[investigate] This needs to be investigated.	[जांच करना] इसकी जांच किए जाने की आवश्यकता है।

70	[unauthorised] Drawal of pay allowances beyond the sanctioned strength is unauthorised.	[अनधिकृत] स्वीकृत संख्या से अधिक वेतन भत्तों का आहरण अनधिकृत है।
71	[under-utilisation] Due to under-utilisation of machines.	[कम उपयोग] मशीनों के कम उपयोग की वजह से।
72	[Unfruitful expenditure] Unfruitful expenditure due to non-functional Plants.	[निष्फल व्यय] अक्रियाशील संयंत्रों के कारण निष्फल व्यय।
73	[However] However, the fact, remains that	[हालांकि] हालांकि, तथ्य यह है कि
74	[remittance] The Commissioner remarked on the short remittance of dues.	[भुगतान] आयुक्त ने बकाए के कम भुगतान पर टिप्पणी की.
75	[monitoring mechanism] Effective monitoring mechanism may be put in place.	[निगरानी तंत्र] प्रभावी निगरानी तंत्र स्थापित किया जाए।
76	[Non-compliance] Non-compliance of these instructions were also noticed in audit.	[अननुपालन] लेखापरीक्षा में इन निर्देशों का अननुपालन भी पाया गया।
77	[immediate action] The Department may initiate immediate action.	[तत्काल कार्रवाई] विभाग तत्काल कार्रवाई प्रारंभ करें।
78	[noticed] It was also noticed.	[पाया गया] यह भी पाया गया।
79	[scrutiny] Audit scrutiny of the records revealed .	[संवीक्षा] अभिलेखों की लेखापरीक्षा संवीक्षा से पता चला।
80	[Audit] On this being pointed out in Audit .	[लेखापरीक्षा] इस विषय पर लेखापरीक्षा में बताए जाने पर।
81	[awaited] Replies were awaited.	[प्रतीक्षित] उत्तर प्रतीक्षित थे।
82	[referred to] The matter was referred to the Department..	[भेजा गया] मामला विभाग को भेजा गया।
83	[tenable] The reply is not tenable.	[तर्कसंगत] उत्तर तर्कसंगत नहीं है।
84	[revamp] The Government may look into this matter and revamp the system.	[सुधार करें] सरकार इस मामले में कार्यवाही करे तथा सिस्टम में सुधार करे।
85	[statutory norm] There was no annual statutory norm.	[सांविधिक मानक] कोई वार्षिक सांविधिक मानक नहीं था।
86	[Remedial measures] Remedial measures were being taken.	[उपचारात्मक उपाय] उपचारात्मक उपाय किए जा रहे थे।
87	[Management] Reply of Management needs to be seen in the light of the fact.	[प्रबंधन] प्रबंधन के उत्तर को इस तथ्य के प्रकाश में देखा जाना चाहिए।
88	[phased manner] All the recommendations were implemented in a phased manner.	[चरणबद्ध तरीके से] सभी सिफारिशों को चरणबद्ध तरीके से लागू किया गया।
89	[Safety Policy] It would be regarded as non-compliance of Safety Policy and Safety Manual.	[सुरक्षा नीति] इसे सुरक्षा नीति तथा सुरक्षा नियमावली का अननुपालन माना जाएगा।
90	[defective material] These were on account of defective material.	[दोषपूर्ण सामग्री] ये दोषपूर्ण सामग्री के कारण हुए थे।

हिंदी कार्यशाला में विषय विशेषज्ञ श्री विष्णु नायक, सहायक महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, चंडीगढ़ द्वारा व्याख्यान दिया गया।

हिंदी कार्यशाला में वरि. उप महालेखाकार (प्रशा.) महोदया द्वारा राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन विषयक व्याख्यान दिया गया।

ऑडिट दिवस के उपलक्ष्य में रक्तदान शिविर आयोजित किया गया

स्वतंत्रता दिवस समारोह

ऑडिट दिवस समारोह

ऑडिट दिवस के अवसर पर बच्चों के लिए आयोजित चित्रकारी प्रतियोगिता।

हिंदी पखवाडा के अवसर पर पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन

हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत आयोजित हिंदी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेता प्रतिभागी।

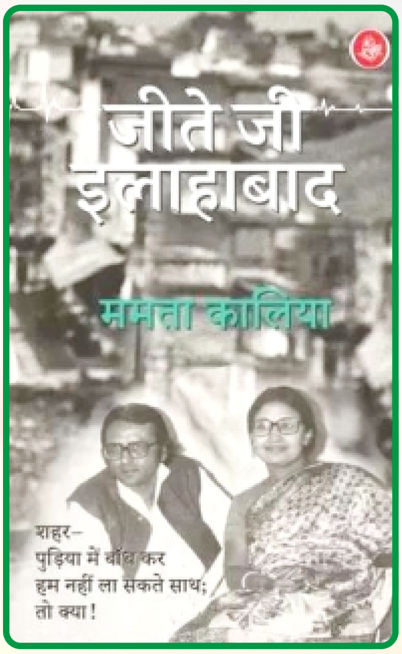

आज के रचनाकार

ममता कालिया: यथार्थ, व्यंग्य और स्त्री-अनुभव की सशक्त आवाज़

जन्म : 2 नवम्बर 1940, वृंदावन, उत्तर प्रदेश।

वे लंबे समय तक इलाहाबाद (वर्तमान प्रयागराज) में रहीं और वहाँ के समृद्ध साहित्यिक परिवेश से गहराई से जुड़ी रहीं। उनके लेखन में इलाहाबाद का बौद्धिक माहौल और मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताएँ सजीव रूप में अभिव्यक्त होती हैं।

पुरस्कार एवं सम्मान:

- साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2025
  'जीते जी इलाहाबाद' के लिए (घोषणा 2026)
- व्यास सम्मान 2017
  उपन्यास 'दुक्खम सुक्खम' के लिए

प्रमुख रचनाएँ

- उपन्यास: बेघर, नरक-दर-नरक, दौड़, दुक्खम सुक्खम, सपनों की होम डिलिवरी, कल्चर-वल्चर
- कहानी-संग्रह: छुटकारा, एक अदद औरत, उसका यौवन, जाँच अभी जारी है, सीट नंबर छह
- संस्मरण: जीते जी इलाहाबाद (साहित्य अकादेमी पुरस्कार), कितने शहरों में कितनी बार
- कविता-संग्रह: खांटी घरेलू औरत, कितने प्रश्न करूं

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक + COMPTROLLER & AUDITOR GENERAL OF INDIA

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) हरियाणा, चण्डीगढ़
प्लॉट नं. 4-5, सैक्टर 33 बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़
www.aghry.nic.in